श्रीपरमात्मने नमः

श्रीजैनसिद्धान्तप्रवेशिका

नत्वा जिनेन्द्रं गतसर्वदोषं
सर्वज्ञदेवं हितदेशकं च ।
श्रीजैनसिद्धान्तप्रवेशिकेयं
विरच्यते स्वल्पधियां हिताय ॥ १ ॥

प्रथमोऽध्यायः ।

१ प्रश्न—पदार्थोंको जाननेके कितने उपाय हैं।

१ उत्तर—चार उपाय हैं—लक्षण, प्रमाण, नय और निक्षेप ।

२ लक्षण किसको कहते हैं ?

२ बहुतसे मिले हुए पदार्थोंमेंसे किसी एक पदार्थके जुदे करनेवाले हेतुको लक्षण कहते हैं । जैसे जीवका लक्षण चेतना ।

३ लक्षणके कितने भेद हैं?

३ दो भेद हैं—एक आत्मभूत दूसरा अनात्मभूत।

४ आत्मभूतलक्षण किसको कहते हैं?

४ जो वस्तुके स्वरूपमें मिला हो। जैसे-अग्निका लक्षण उष्णपना।

५ अनात्मभूतलक्षण किसको कहते हैं?

५ जो वस्तुके स्वरूपमें मिला न हो। जैसे—दंडी पुरुषका लक्षण दंड।

६ लक्षणाभास किसको कहते हैं?

६ जो लक्षण सदोष हो।

७ लक्षणके दोष कितने हैं?

७ तीन हैं—अव्याप्ति, अतिव्याप्ति और असंभव।

८ लक्ष्य किसको कहते हैं?

८ जिसका लक्षण किया जाय, उसको लक्ष्य कहते हैं।

९ अव्याप्तिदोष किसको कहते हैं?

९ लक्ष्यके एकदेशमें लक्षणके रहनेको अव्याप्ति दोप कहते हैं। जैसे पशुका लक्षण सींग।

१० अतिव्याप्ति दोष किसको कहते हैं?

१०. लक्ष्य और अलक्ष्यमें लक्षणके रहनेको अति-व्याप्ति दोष कहते हैं। जैसे—गौका लक्षण सींग।

११ अलक्ष्य किसको कहते हैं?

११ लक्ष्यके सिवाय दूसरे पदार्थोंको अलक्ष्य कहते हैं।

१२ असंभवदोष किसको कहते हैं?

१२ लक्ष्यमें लक्षणकी असंभवताको असम्भवदोष कहते हैं।

१३ प्रमाण किसको कहते हैं?

१३ सच्चे ज्ञानको प्रमाण कहते हैं।

१४ प्रमाणके कितने भेद हैं?

१४ दो भेद हैं, एक प्रत्यक्ष और दूसरा परोक्ष।

१५ प्रत्यक्ष किसको कहते हैं?

१५ जो पदार्थको स्पष्ट जाने।

१६ प्रत्यक्षके कितने भेद हैं ?

१६ दो भेद हैं—एक सांव्यवहारिकप्रत्यक्ष दूसरा पारमार्थिकप्रत्यक्ष।

१७ सांव्यवहारिकप्रत्यक्ष किसको कहते हैं ?

१७ जो इन्द्रिय और मनकी सहायतासे पदार्थको एकदेश स्पष्ट जानै।

१८ पारमार्थिकप्रत्यक्ष किसको कहते हैं ?

१८ जो विना किसीकी सहायताके पदार्थको स्पष्ट जानै।

१९ पारमार्थिकप्रत्यक्षके कितने भेद हैं ?

१९ दो भेद हैं—एक विकलपारमार्थिक दूसरा सकलपारमार्थिक।

२० विकलपारमार्थिकप्रत्यक्ष किसको कहते हैं?

२० जो रूपी पदार्थोंको विना किसीकी सहायताके स्पष्ट जानै।

२१ विकलपारमार्थिकप्रत्यक्षके कितने भेद हैं?

२१ दो भेद हैं—एक अवधिज्ञान दूसरा मनः-पर्ययज्ञान।

२२ अवधिज्ञान किसको कहते हैं?

२२ द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावकी मर्यादालिये जो रूपी पदार्थको स्पष्ट जानै।

२३ मनःपर्ययज्ञान किसको कहते हैं?

२३ द्रव्यक्षेत्र कालभावकी मर्यादा लिये हुए जो दूसरेके मनमें तिष्ठते हुए रूपी पदार्थको स्पष्ट जानै।

२४ सकलपारमार्थिकप्रत्यक्ष किसको कहते हैं?

२४ केवलज्ञानको।

२५ केवलज्ञान किसे कहते हैं?

२५ जो त्रिकालवर्त्ती समस्त पदार्थोंको युगपत् (एकसाथ) स्पष्ट जानै।

२६ परोक्षप्रमाण किसे कहते हैं?

२६ जो दूसरेकी सहायतासे पदार्थको स्पष्ट जानै।

२७ परोक्ष प्रमाणके कितने भेद हैं?

२७ पांच हैं—स्मृति, प्रत्यभिज्ञान, तर्क, अनुमान और आगम।

२८ स्मृति किसको कहते हैं?

२८ पहिले अनुभव किये हुए पदार्थके याद करनेको स्मृति कहते हैं।

२९ प्रत्यभिज्ञान किसको कहते हैं?

२९ स्मृति और प्रत्यक्षके विषयभूत पदार्थोंमें जोड़रूप ज्ञानको प्रत्यभिज्ञान कहते हैं। जैसे—यह वही मनुष्य है, जिसे कल देखा था।

३० प्रत्यभिज्ञानके कितने भेद हैं?

३० एकत्वप्रत्यभिज्ञान, सादृश्यप्रत्यभिज्ञान आदि अनेक भेद हैं।

३१ एकत्वप्रत्यभिज्ञान किसको कहते हैं?

३१ स्मृति और प्रत्यक्षके विषयभूत पदार्थमें एकता दिखाते हुए जोड़रूप ज्ञानको एकत्वप्रत्यभिज्ञान कहते हैं। जैसे—यह वही मनुष्य है, जिसे कल देखा था।

३२ सादृश्यप्रत्यभिज्ञान किसको कहते हैं?

३२ स्मृति और प्रत्यक्षके विषयभूत पदार्थोंमें सादृश्य दिखाते हुए जोड़रूप ज्ञानको सादृश्यप्रत्यभिज्ञान कहते हैं। जैसे—यह गौ गवयके (रोझके) सदृश है।

३३ तर्क किसको कहते हैं?

३३ व्याप्तिके ज्ञानको तर्क कहते हैं।

३४ व्याप्ति किसको कहते हैं?

३४ अविनाभावसंबन्धको व्याप्ति कहते हैं।

३५ अविनाभावसंबंध किसको कहते हैं?

३५ जहां २ साधन (हेतु) होय, वहां २ साध्यका होना, और जहां २ साध्य नहीं होय, वहां २ साधनके भी न होनेको अविनाभावसंबंध कहते हैं। जैसे—जहां जहां धूम है, वहां २ अग्नि है और जहां २ अग्नि नहीं है, वहां २ धूम भी नहीं है।

३६ साधन किसको कहते हैं?

३६ जो साध्यके विना न होवै। जैसे—अग्निका (साधन) हेतु धूम।

३७ साध्य किसको कहते हैं ?

३७ इष्ट अवाधित असिद्धको साध्य कहते हैं।

३८ इष्ट किसको कहते हैं ?

३८ वादी और प्रतिवादी जिसको सिद्ध करना चाहै, उसको इष्ट कहते हैं।

३९ अवाधित किसको कहते हैं ?

३९ जो दूसरे प्रमाणसे वाधित न हो। जैसे—अग्निका ठंडापन प्रत्यक्षप्रमाणसे वाधित है, इसकारण यह ठंडापन साध्य नहिं हो सकता।

४० असिद्ध किसको कहते हैं ?

४० जो दूसरे प्रमाणसे सिद्ध न हो, उसे असिद्ध कहते हैं। अथवा जिसका निश्चय न हो, उसे असिद्ध कहते हैं।

४१ अनुमान किसको कहते हैं ?

४१ साधनसे साध्यके ज्ञानको अनुमान कहते हैं।

४२ हेत्वाभास (साधनाभास) किसको कहते हैं ?

४२ सदोष हेतुको।

४३ हेत्वाभासके कितने भेद हैं ?

४३ चार हैं—असिद्ध, विरुद्ध, अनैकान्तिक (व्यभिचारी) और अकिंचित्कर।

४४ असिद्धहेत्वाभास किसको कहते हैं ?

४४ जिस हेतुके अभावका (गैरमौजूदगीका) निश्चय हो, अथवा उसके सद्भावमें (मौजूदगीमें) संदेह (शक) हो, उसको असिद्ध हेत्वाभास कहते हैं। जैसे- "शब्द नित्य है। क्योंकि—नेत्रका विषय है।" परन्तु शब्द कर्णका विषय है, नेत्रका नहिं हो सकता, इस कारण "नेत्रका विषय" यह हेतु असिद्धहेत्वाभास है।

४५ विरुद्धहेत्वाभास किसको कहते हैं ?

४५ साध्यसे विरुद्ध पदार्थके साथ जिसकी व्याप्ति हो, उसको विरुद्धहेत्वाभास कहते हैं। जैसे—"शब्द नित्य है। क्योंकि—परिणामी है।" इस अनुमानमें परिणा-

मीकी व्याप्ति अनित्यके साथ है, नित्यके साथ नहीं है। इसलिये नित्यत्वका "परिणामी हेतु" विरुद्धहेत्वाभास है।

४६ अनैकान्तिक (व्यभिचारी) हेत्वाभास किसको कहते हैं?

४६ जो हेतु पक्ष सपक्ष विपक्ष इन तीनोंमें व्यापै, उसको अनैकान्तिकहेत्वाभास कहते हैं। जैसे—"इस कोठेमें धूम है। क्योंकि—इसमें अग्नि है।" यहां अग्नित्व हेतु पक्ष सपक्ष विपक्ष तीनोंमें व्यापक होनेसे अनैकान्तिकहेत्वाभास है।

४७ पक्ष किसको कहते हैं?

४७ जहां साध्यके रहनेका शक हो। जैसे ऊपरके दृष्टान्तमें कोठा।

४८ सपक्ष किसको कहते हैं?

४८ जहां साध्यके सद्भावका (मौजूदगीका) निश्चय हो। जैसे—धूमका सपक्ष गीले इंधनसे मिली हुई अग्नि है।

४९ विपक्ष किसको कहते हैं?

४९ जहां साध्यके अभावका (गैरमौजूदगीका) निश्चय हो। जैसे—अग्निसे तपा हुआ लोहेका गोला।

५० अकिञ्चित्करहेत्वाभास किसको कहते हैं?

५० जो हेतु कुछ भी कार्य (साध्यकी सिद्धि) करनेमें समर्थ न हो।

५१ अकिंचित्करहेत्वाभासके कितने भेद हैं?

५१ दो हैं—एक सिद्धसाधन, दूसरा बाधितविषय।

५२ सिद्धसाधन किसको कहते हैं?

५२ जिस हेतुका साध्य सिद्ध हो। जैसे—अग्नि गर्म है। क्योंकि—स्पर्श इंद्रियसे ऐसा ही प्रतीत होता है।

५३ बाधितविषयहेत्वाभास किसको कहते हैं?

५३ जिस हेतुके साध्यमें दूसरे प्रमाणसे बाधा आवै।

५४ बाधितविषयहेत्वाभासके कितने भेद हैं?

५४ प्रत्यक्षबाधित, अनुमानबाधित, आगमबाधित, स्ववचनबाधित आदि अनेक भेद हैं।

५५ प्रत्यक्षबाधित किसको कहते हैं?

५५ जिसके साध्यमें प्रत्यक्षसे बाधा आवै। जैसे— "अग्नि ठंडी है। क्यों कि यह द्रव्य है।" तो यह हेतु प्रत्यक्षबाधित है।

५६ अनुमानबाधित किसको कहते हैं?

५६ जिसके साध्यमें अनुमानसे बाधा आवै। जैसे— "घास आदि कर्त्ताकी बनाई हुई हैं। क्योंकि—ये कार्य हैं।" परन्तु इसमें इस अनुमानसे बाधा आती है कि— घास आदि किसीकी बनाई हुई नहीं है। क्योंकि इनका बनानेवाला शरीरधारी नहीं है। जो जो शरीर धारीकी बनाई हुई नहीं हैं, वे २ वस्तु कर्त्ताकी बनाई हुई नहीं है। जैसे—आकाश।

५७ आगमबाधित किसको कहते हैं?

५७ शास्त्रसे जिसका साध्य बाधित हो, उसको आगम बाधित कहते हैं। जैसे—पाप सुखका देनेवाला है। क्योंकि यह कर्म है। जो जो कर्म होते हैं, वे वे सुखके देनेवाले होते हैं। जैसे—पुण्यकर्म। इसमें शास्त्रसे

बाधा आती है। क्योंकि शास्त्रमें पापको दुःख देने-वाला लिखा है।

५८ स्ववचनबाधित किसको कहते हैं?

५८ जिसके साध्यमें अपने वचनसे ही बाधा आवै। जैसे—मेरी माता बन्ध्या है। क्योंकि पुरुषका संयोग होनेपर भी उसके गर्भ नहिं रहता।

५९ अनुमानके कितने अंग हैं?

५९ पांच हैं। प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय और निगमन।

६० प्रतिज्ञा किसको कहते हैं?

६० पक्ष और साध्यके कहनेको प्रतिज्ञा कहते हैं। जैसे—"इस पर्वतमें अग्नि है।"

६१ हेतु किसको कहते हैं?

६१ साधनके वचनको (कहनेको) हेतु कहते हैं। जैसे—"क्योंकि यह धूमवान् है।"

६२ उदाहरण किसको कहते हैं?

६२ व्याप्तिपूर्वक दृष्टान्तके कहनेको उदाहरण कहते

हैं । जैसे—जहां २ धूम है, वहां २ अग्नि है। जैसे रसोईका घर। और जहां २ अग्नि नहीं है, वहां २ धूम भी नहीं है। जैसे तालाव।

६३ दृष्टान्त किसको कहते हैं?

६३ जहांपर साध्य और साधनकी मौजूदगी या गैर मौजूदगी दिखाई जाय। जैसे—रसोईका घर अथवा तालाव।

६४ दृष्टान्तके कितने भेद हैं?

६४ दो हैं—एक अन्वयदृष्टान्त दूसरा व्यतिरेक दृष्टान्त।

६५ अन्वयदृष्टान्त किसको कहते हैं?

६५ जहां साधनकी मौजूदगीमें साध्यकी मौजूदगी दिखाई जाय। जैसे—रसोईके घरमें धूमका सद्भाव होनेपर अग्निका सद्भाव दिखाया गया।

६६ व्यतिरेकदृष्टांत किसको कहते हैं?

६६ जहां साध्यकी गैरमौजूदगीमें साधनकी गैरमौजूदगी दिखाई जाय। जैसे—तालाव।

६७ उपनय किसको कहते हैं ?

६७ पक्ष और साधनमें दृष्टान्तकी सदृशता दिखानेको उपनय कहते हैं। जैसे—यह पर्वत भी वैसा ही धूमवान है।

६८ निगमन किसको कहते हैं ?

६८ नतीजा निकालकर प्रतिज्ञाके दोहरानेको निगमन कहते हैं। जैसे—इसलिये यह पर्वत भी अग्निवान है।

६९ हेतुके कितने भेद हैं ?

६९ तीन हैं—केवलान्वयी, केवलव्यतिरेकी, अन्वयव्यतिरेकी।

७० केवलान्वयी हेतु किसको कहते हैं ?

७० जिस हेतुमें सिर्फ अन्वयदृष्टान्त हो। जैसे—जीव अनेकान्तस्वरूप है। क्योंकि सत्स्वरूप है। जो जो सत्स्वरूप होता है, वह २ अनेकान्तस्वरूप होता है। जैसें—पुद्गलादिक।

७१ केवलव्यतिरेकी हेतु किसको कहते हैं ?

७१ जिसमें सिर्फ व्यतिरेक दृष्टांत पाया जावे जैसें—

जिन्दा शरीरमें आत्मा है। क्योंकि इसमें श्वासोच्छ्वास है। जहां २ आत्मा नहिं होता, वहां २ श्वासोच्छ्वासभी नहिं होता। जैसे—चौकीवगैरह।

७२ अन्वयव्यतिरेकी हेतु किसको कहते हैं?

७२ जिसमें अन्वयी दृष्टान्त और व्यतिरेकी दृष्टांत दोनो हों। जैसे पर्वतमें अग्नि है। क्योंकि—इसमें धूम है। जहां २ धूम है, वहां २ अग्नि होती है। जैसे रसोईका घर। जहां २ अग्नि नहिं है, वहां २ धूम भी नहीं है। जैसे तालाव।

७३ आगमप्रमाण किसको कहते हैं?

७३ आप्तके वचन आदिसे उत्पन्न हुए पदार्थके ज्ञानको।

७४ आप्त किसको कहते हैं?

७४ परमहितोपदेशक सर्वज्ञदेवको आप्त कहते हैं।

७५ प्रमाणका विषय क्या है?

७५ सामान्य अथवा धर्मी तथा विशेष अथवा धर्म दोनों अंशोंका समूहरूप वस्तु प्रमाणका विषय है।

७६ विशेष किसको कहते हैं ?

७६ वस्तुके किसी खास अंश अथवा हिस्सेको विशेष कहते हैं ।

७७ विशेषके कितने भेद हैं ?

७७ दो हैं—एक सहभावी विशेष, दूसरा क्रमभावी विशेष ।

७८ सहभावी विशेष किसको कहते हैं ?

७८ वस्तुके पूरे हिस्से और उसकी सब अवस्थाओंमें रहनेवाले विशेषको सहभावी विशेष अथवा गुण कहते हैं ।

७९ क्रमभावी विशेष किसको कहते हैं ?

७९ क्रमसे होनेवाले वस्तुके विशेषको क्रमभावी विशेष अथवा पर्याय कहते हैं ।

८० प्रमाणाभास किसको कहते हैं ?

८० मिथ्याज्ञानको प्रमाणाभास कहते हैं ?

८१ प्रमाणाभास कितने हैं ?

८१ तीन हैं—संशय, विपर्यय और अनध्यवसाय ।

८२ संशय किसको कहते हैं ?

८२ विरुद्ध अनेक कोटी स्पर्श करनेवाले ज्ञानको संशय कहते हैं। जैसे—यह सीप है या चांदी ?

८३ विपयर्य किसको कहते हैं ?

८३ विपरीत एक कोटीके निश्चय करनेवाले ज्ञान-को विपर्यय कहते हैं। जैसे—सीपको चांदी जानना।

८४ अनध्यवसाय किसको कहते हैं ?

८४ "यह क्या है ?" ऐसे प्रतिभासको अनध्यव-साय कहते हैं। जैसे मार्ग चलते हुएके तृण वगैरहका ज्ञान।

८५ नय किसको कहते हैं ?

८५ वस्तुके एक देशको जाननेवाले ज्ञानको नय कहते हैं।

८६ नयके कितने भेद हैं ?

८६ दो हैं, एक निश्चयनय दूसरा व्यवहारनय अथवा उपनय।

८७ निश्चयनय किसको कहते हैं ?

८७ वस्तुके किसी असली अंशके ग्रहण करनेवाले

ज्ञानको निश्चयनय कहते हैं। जैसे--मिट्टीके घड़ेको मिट्टी-का घड़ा कहना।

८८ व्यवहारनय किसको कहते हैं ?

८८ किसी निमित्तके वशसे एक पदार्थको दूसरे पदार्थरूप जाननेवाले ज्ञानको व्यवहारनय कहते हैं। जैसे--मिट्टीके घड़ेको घीके रहनेके निमित्तसे घीका घड़ा कहना।

८९ निश्चयनयके कितने भेद हैं ?

८९ दो हैं--एक द्रव्यार्थिक नय दूसरा पर्यायार्थिक नय।

९० द्रव्यार्थिकनय किसको कहते हैं ?

९० जो द्रव्य अर्थात् सामान्यको ग्रहण करै।

९१ पर्यायार्थिकनय किसको कहते हैं ?

९१ जो विशेषको (गुण अथवा पर्यायको) विषय करै।

९२ द्रव्यार्थिकनयके कितने भेद हैं ?

९२ तीन हैं--नैगम, संग्रह, व्यवहार।

९३ नैगमनय किसको कहते हैं ?

९३ दो पदार्थोंमेंसे एकको गौण और दूसरेको प्रधान करके भेद अथवा अभेदको विषय करनेवाला ज्ञान नैगमनय है तथा पदार्थके संकल्पको ग्रहणकरने-वाला ज्ञान नैगमनय है। जैसे—कोई आदमी रसोईमें चावल लेकर चुनता था। किसीने उससे पूछा कि क्या कर रहे हो? तब उसने कहा कि भात बना रहा हूं। यहां चावल और भातमें अभेदविविक्षा है। अथवा चावलोंमें भातका संकल्प है।

९४ संग्रहनय किसको कहते हैं ?

९४ अपनी जातिका विरोध नहीं करके अनेक वि-षयोंका एकपनेसे जो ग्रहण करै, उसको संग्रहनय कह-ते हैं। जैसे—जीवके कहनेसे चारों गतिके सब जीवोंका ग्रहण होता है।

९५ व्यवहारनय किसको कहते हैं ?

९५ जो संग्रहनयसे ग्रहण किये हुए पदार्थोंको

विधिपूर्वक भेद करै, सो व्यवहारनय है। जैसे जीवका भेद त्रस और स्थावर आदि करना।

९६ पर्यायार्थिकनयके कितने भेद हैं?

९६ चार हैं—ऋजुसूत्र, शब्द, समभिरूढ़, और एवंभूत।

९७ ऋजुसूत्रनय किसको कहते हैं?

९७ भूत भविष्यतकी अपेक्षा न करके वर्तमान-पर्याय मात्रको जो ग्रहण करै, सो ऋजुसूत्रनय है।

९८ शब्दनय किसको कहते हैं?

९८ लिंग, कारक, वचन, काल, उपसर्गादिकके भेदसे जो पदार्थको भेदरूप ग्रहण करै, सो शब्दनय है। जैसे—दार, भार्या, कलत्र ये तीनों भिन्न २ लिंगके शब्द एक ही स्त्रीपदार्थके वाचक हैं। सो यह नय स्त्रीपदार्थको तीनभेदरूप ग्रहण करता है। इसीप्रकार कारकादिकके भी दृष्टान्त जानने।

९९ समभिरूढ़नय किसको कहते हैं?

९९ लिंगादिकका भेद न होनेपर भी पर्यायशब्दके

भेदसे जो पदार्थको भेदरूप ग्रहण करै। जैसे—इन्द्र, शक्र, पुरन्द्र ये तीनों एक ही लिंगके पर्यायशब्द देवराजके वाचक हैं। सो यह नय देवराजको तीन भेदरूप ग्रहण करता है।

१०० एवंभूतनय किसको कहते हैं ?

१०० जिस शब्दका जिस क्रियारूप अर्थ है, उसी क्रियारूप परिणमे पदार्थको जो ग्रहण करै, सो एवंभूतनय है। जैसे—पुजारीको पूजा करते वक्त ही पुजारी कहना।

१०१ व्यवहारनय या उपनयके कितने भेद हैं ?

१०१ तीन हैं—सद्भूतव्यवहारनय, असद्भूतव्यवहारनय, और उपचरितव्यवहारनय अथवा उपचरितासद्भूतव्यवहारनय।

१०२ सद्भूतव्यवहारनय किसको कहते हैं ?

१०२ एक अखंडद्रव्यको भेदरूप विषय करनेवाले

ज्ञानको सद्भूतव्यवहारनयं कहते हैं । जैसे—जीवके केवलज्ञानादिक वा मतिज्ञानादिक गुण हैं ।

१०३ असद्भूतव्यवहारनय किसे कहते हैं ?

१०३ जो मिले हुए भिन्नपदार्थोंको अभेदरूप ग्रहण करै । जैसे—यह शरीर मेरा है अथवा मिट्टीके घड़ेको घीका घड़ा कहना ।

१०४ उपचरितव्यवहार अथवा उपचरित-असद्भूतव्यवहारनय किसको कहते हैं ?

१०४ अत्यन्तभिन्न पदार्थोंको जो अभेदरूप ग्रहण करै । जैसे हाथी घोड़ा महल मकान मेरे हैं इत्यादि ।

१०५ निक्षेप किसको कहते हैं ?

१०५ युक्तिकरके सुयुक्त मार्ग होते हुए कार्यके वशसे नाम स्थापना द्रव्य और भावमें पदार्थके स्थापन-को निक्षेप कहते हैं ।

१०६ निक्षेपके कितने भेद हैं ?

१०६ चार हैं—नामनिक्षेप, स्थापनानिक्षेप, द्रव्य-निक्षेप और भावनिक्षेप ।

१०७ नामनिक्षेप किसको कहते हैं ?

१०७ जिस पदार्थमें जो गुण नहीं है, उसको उस नामसे कहना। जैसे किसीने अपने लड़केका नाम हाथी—सिंह रक्खा है। परंतु उसमें हाथी और सिंह दोनोंके गुण नहीं हैं।

१०८ स्थापनानिक्षेप किसको कहते हैं ?

१०८ साकार अथवा निराकार पदार्थमें वह यह है, इस प्रकार अवधान करके निवेश करनेको स्थापना निक्षेप कहते हैं। जैसे,—पार्श्वनाथके प्रतिबिम्बको पार्श्वनाथ कहना अथवा सतरंजके मोहोरोंको हाथी घोड़ा कहना।

१०९ नामनिक्षेप और स्थापनानिक्षेपमें क्या भेद है ?

१०९ नामनिक्षेपमें मूलपदार्थकी तरह सत्कार आदिककी प्रवृत्ति नहिं होती परंतु स्थापनानिक्षेपमें होती है। जैसे—किसीने अपने लड़केका नाम पार्श्वनाथ रख लिया, तो उस लड़केका सत्कार पार्श्वनाथकी

तरह नहिं होता । परंतु पार्श्वनाथकी प्रतिमाका होता है ।

११० द्रव्यनिक्षेप किसको कहते हैं ?

११० जो पदार्थ आगामी परिणामकी योग्यता रखनेवाला हो उसको द्रव्यनिक्षेप कहते हैं—जैसें राजाके पुत्रको राजा कहना ।

१११ भावनिक्षेप किसको कहते हैं ?

१११ वर्तमानपर्यायसंयुक्त वस्तुको भावनिक्षेप कहते हैं । जैसे राज्य करते हुए पुरुषको राजा कहना ।

इति प्रथमोऽध्यायः समाप्तः ॥ १ ॥

अथ द्वितीयोऽध्यायः प्रारभ्यते ।

११२ द्रव्य किसको कहते हैं ?

११२ गुणोंके समूहको द्रव्य कहते हैं ।

११३ गुण किसको कहते हैं ?

११३ द्रव्यके पूरे हिस्सेमें और उसकी सब हालतोंमें जो रहै, उसको गुण कहते हैं।

११४ गुणके कितने भेद हैं?

११४ दो हैं—एक सामान्य दूसरा विशेष।

११५ सामान्यगुण किसको कहते हैं?

११५ जो सब द्रव्योंमें व्यापै, उसको सामान्यगुण कहते हैं?

११६ विशेष गुण किसको कहते हैं?

११६ जो सब द्रव्योंमें न व्यापै, उसको विशेष गुण कहते हैं।

११७ सामान्यगुण कितने हैं?

११७ अनेक हैं—लेकिन उनमें ६ गुण मुख्य हैं। जैसे—अस्तित्व, वस्तुत्व, द्रव्यत्व, प्रमेयत्व, अगुरुलघुत्व, प्रदेशवत्त्व।

११८ अस्तित्वगुण किसको कहते हैं?

११८ जिस शक्तिके निमित्तसे द्रव्यका कभी नाश न हो, उसको अस्तित्व गुण कहते हैं।

११९ वस्तुत्व गुण किसको कहते हैं?

११९ जिस शक्तिके निमित्तसे द्रव्यमें अर्थक्रिया हो, उसको वस्तुत्वगुण कहते हैं। जैसे—घड़ेकी अर्थ-क्रिया जलधारण है।

१२० द्रव्यत्वगुण किसको कहते हैं?

१२० जिस शक्तिके निमित्तसे द्रव्य सर्वदा एकसा न रहै और जिसकी पर्यायें (हालतें) हमेशा बदलती रहैं।

१२१ प्रमेयत्वगुण किसको कहते हैं?

१२१ जिस शक्तिके निमित्तसे द्रव्य किसी न किसीके ज्ञानका विषय हो, उसको प्रमेयत्व गुण कहते हैं।

१२२ अगुरुलघुत्व गुण किसको कहते हैं?

१२२ जिस शक्तिके निमित्तसे द्रव्यकी द्रव्यता कायम रहै अर्थात् एक द्रव्य दूसरे द्रव्यरूप न परिणमे और एक गुण दूसरे गुणरूप न परिणमे तथा एक द्रव्यके अनेक या अनन्त गुण बिखरकर जुदे २ न हो जावैं, उसको अगुरुलघुत्व गुण कहते हैं।

१२३ प्रदेशवत्त्वगुण किसको कहते हैं?

१२३ जिस शक्तिके निमित्तसे द्रव्यका कुछ न कुछ आकार अवश्य हो।

१२४ द्रव्यके कितने भेद हैं?

१२४ छह भेद हैं—जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल।

१२५ जीवद्रव्य किसको कहते हैं?

१२५ जिसमें चेतना गुण पाया जाय, उसको जीव-द्रव्य कहते हैं।

१२६ पुद्गल द्रव्य किसको कहते हैं?

१२६ जिसमें स्पर्श, रस, गन्ध, और वर्ण पाया जाय।

१२७ पुद्गल द्रव्यके कितने भेद हैं?

१२७ दो भेद हैं—एक परमाणु दूसरा स्कन्ध।

१२८ परमाणु किसको कहते हैं?

१२८ सबसे छोटे पुद्गलको परमाणु कहते हैं।

१२९ स्कन्ध किसको कहते हैं?

१२९ अनेक परमाणुओंके बन्धको स्कन्ध कहते हैं।

१३० बन्ध किसको कहते हैं?

१३० अनेक चीजोंमें एकपनेका ज्ञान करानेवाले सम्बन्धविशेषको बन्ध कहते हैं।

१३१ स्कन्धके कितने भेद हैं?

१३१ आहारवर्गणा, तैजसवर्गणा, भाषावर्गणा, मनोवर्गणा, कार्माणवर्गणा आदि २२ भेद हैं।

१३२ आहारवर्गणा किसको कहते हैं?

१३२ औदारिक, वैक्रियक, आहारक, इन तीन शरीररूप जो परिणमै, उसको आहारवर्गणा कहते हैं।

१३३ औदारिकशरीर किसको कहते हैं?

१३३ मनुष्य, तिर्यंचके स्थूल शरीरको औदारिक शरीर कहते हैं।

१३४ वैक्रियकशरीर किसको कहते हैं?

१३४ जो छोटे बडे एक अनेक आदि नानाक्रियाओंको करै, ऐसे देव और नारकियोंके शरीरको वैक्रियक शरीर कहते हैं।

१३५ आहारकशरीर किसको कहते हैं?

१३५ छट्ठे गुणस्थानवर्त्ती मुनिके तत्त्वोंमें कोई शंका

होनेपर केवली वा श्रुतकेवलीके निकट जानेके लिये मस्तकमेंसे जो एक हाथका पुतला निकलता है, उसको आहारक शरीर कहते हैं।

१३६ तैजसवर्गणा किसको कहते हैं?

१३६ औदारिक और वैक्रियक शरीरोंको कान्ति देनेवाला तैजस शरीर जिस वर्गणासे बनै उसको तैजसवर्गणा कहते हैं।

१३७ भाषावर्गणा किसको कहते हैं?

१३७ जो शब्दरूप परिणमै, उसको भाषावर्गणा कहते हैं।

१३८ कार्माणवर्गणा किसको कहते हैं?

१३८ जो कार्माण शरीररूप परिणमै, उसको कार्माण वर्गणा कहते हैं।

१३९ कार्माणशरीर किसको कहते हैं?

१३९ ज्ञानावरणादि अष्टकर्मोंके समूहको कार्माण शरीर कहते हैं।

१४० तैजस और कार्माणशरीर किसके होते हैं ?

१४० सब संसारी जीवोंके तैजस और कार्माण शरीर होते हैं ।

१४१ धर्मद्रव्य किसको कहते हैं ?

१४१ गतिरूप परिणमे जीव और पुद्गलको जो गमनमें सहकारी हो, उसको धर्मद्रव्य कहते हैं । जैसे-मछलीके लिये जल ।

१४२ अधर्मद्रव्य किसको कहते हैं ?

१४२ गतिपूर्वक स्थितिरूप परिणमे जीव और पुद्गलको जो स्थितिमें सहकारी हो, उसको अधर्म द्रव्य कहते हैं ।

१४३ आकाश द्रव्य किसको कहते हैं ?

१४३ जो जीवादिक पांच द्रव्योंको ठहरनेके लिये जगह दे ।

१४४ कालद्रव्य किसको कहते हैं ?

१४४ जो जीवादिक द्रव्योंके परिणमनमें सहकारी

हो, उसको कालद्रव्य कहते हैं। जैसे—कुम्हारके चाकके घूमनेके लिये लोहेकी कीली ।

१४५ कालद्रव्यके कितने भेद हैं ?

१४५ दो हैं—एक निश्चयकाल दूसरा व्यवहारकाल।

१४६ निश्चयकाल किसको कहते हैं ?

१४६ कालद्रव्यको निश्चयकाल कहते हैं ।

१४७ व्यवहारकाल किसको कहते हैं ?

१४७ कालद्रव्यकी घड़ी दिन मास आदि पर्यायोंको व्यवहारकाल कहते हैं ।

१४८ पर्याय किसको कहते हैं ?

१४८ गुणके विकारको पर्याय कहते हैं।

१४९ पर्यायके कितने भेद हैं ?

१४९ दो हैं—व्यञ्जनपर्याय और अर्थपर्याय ।

१५० व्यंजनपर्याय किसको कहते हैं ?

१५० प्रदेशवत्त्व गुणके विकारको व्यंजनपर्याय कहते हैं ।

१५१ व्यंजनपर्यायके कितने भेद हैं ?

१५१ दो हैं—स्वभावव्यंजनपर्याय और विभाव-व्यंजनपर्याय ।

१५२ स्वभावव्यंजनपर्याय किसको कहते हैं ?

१५२ विना दूसरे निमित्तके जो व्यंजनपर्याय हो। जैसे—जीवकी सिद्धपर्याय ।

१५३ विभावव्यंजनपर्याय किसको कहते हैं ?

१५३ दूसरे निमित्तसे जो व्यंजन पर्याय हो, उसको विभावव्यंजनपर्याय कहते हैं। जैसे—जीवकी नर नारकादि पर्याय ।

१५४ अर्थपर्याय किसको कहते हैं ?

१५४ प्रदेशवत्त्व गुणके सिवाय अन्य समस्त गुणोंके विकारको अर्थपर्याय कहते हैं ।

१५५ अर्थपर्यायके कितने भेद हैं ?

१५५ दो हैं—स्वभावअर्थपर्याय और विभाव-अर्थपर्याय ।

१५६ स्वभावअर्थपर्याय किसको कहते हैं ?

१५६ विना दूसरे निमित्तके जो अर्थपर्याय हो,

उसको स्वभावअर्थपर्याय कहते हैं । जैसे—जीवका केवलज्ञान ।

१५७ विभावअर्थपर्याय किसको कहते हैं ?

१५७ पर निमित्तसे जो अर्थपर्याय हो, उसको विभावअर्थपर्याय कहते हैं । जैसे—जीवके रागद्वेष आदिक ।

१५८ उत्पाद किसको कहते हैं ?

१५८ द्रव्यमें नवीन पर्यायकी प्राप्तिको उत्पाद कहते हैं ।

१५९ व्यय किसको कहते हैं ?

१५९ द्रव्यकी पूर्वपर्यायके त्यागको व्यय कहते हैं।

१६० ध्रौव्य किसको कहते हैं ?

१६० प्रत्यभिज्ञानको कारणभूत द्रव्यकी किसी अवस्थाकी नित्यताको ध्रौव्य कहते हैं ।

१६१ द्रव्योंमें विशेष गुण कौन कौनसे हैं ?

१६१ जीवद्रव्यमें चेतना, सम्यक्त्व, चारित्र इ-त्यादि । पुद्गलद्रव्यमें स्पर्श, रस, गन्ध वर्ण । धर्मद्र-

व्यमें गतिहेतुत्व वगैरह। अधर्मद्रव्यमें स्थितिहेतुत्व वगैरह। आकाशद्रव्यमें अवगाहनहेतुत्व। और कालद्रव्यमें परिणमनहेतुत्व वगैरह।

१६२ आकाशके कितने भेद हैं?

१६२ आकाश एक ही अखंड द्रव्य है।

१६३ आकाश कहांपर है?

१६३ आकाश सर्वव्यापी है।

१६४ लोकाकाश किसको कहते हैं?

१६४ जहांतक जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म काल ये पांच द्रव्य हैं उसको लोकाकाश कहते हैं।

१६५ अलोकाकाश किसको कहते हैं?

१६५ लोकसे बाहरके आकाशको अलोकाकाश कहते हैं।

१६६ लोककी मोटाई, ऊँचाई, चौड़ाई कितनी है?

१६६ लोककी मोटाई उत्तर और दक्षिण दिशामें सब जगह सात राजू है। चौड़ाई पूर्व और पश्चिम-

दिशामें मूलमें (नीचे जड़में) सात राजू है। ऊपर क्रमसे घटकर सात राजूकी ऊंचाईपर चौडाई एक राजू है। फिर क्रमसे बढ़कर साढे दश राजूकी ऊंचाईपर चौड़ाई पांचराजू है। फिर क्रमसे घटकर चौदहराजूकी ऊँचाईपर एकराजू चौड़ाई है। और ऊर्द्ध और अधोदिशामें ऊँचाई चौदह राजू है।

१६७ धर्म तथा अधर्मद्रव्यखण्डरूप हैं किंवा अखंडरूप हैं और इनकी स्थिति कहाँ है?

१६७ धर्म और अधर्म दोनों एक एक अखंड द्रव्य हैं और दोनों ही समस्त लोकाकाशमें व्याप्त हैं।

१६८ प्रदेश किसको कहते हैं?

१६८ आकाशके जितने हिस्सेको एक पुद्गल परमाणु रोकै उसको प्रदेश कहते हैं।

१६९ कालद्रव्य कितने भेदरूप हैं और उनकी स्थिति कहां है?

१६९ लोकाकाशके जितने प्रदेश हैं उतने ही का-

लद्रव्य हैं और लोकाकाशके एकएक प्रदेशपर एकएक कालद्रव्य (कालाणु) स्थित है।

१७० पुद्गलद्रव्य कितने और उनकी स्थिति कहां है?

१७० पुद्गलद्रव्य अनन्तानन्त हैं और वे समस्त लोकाकाशमें भरे हुए हैं।

१७१ जीवद्रव्य कितने और कहां हे?

१७१ जीवद्रव्य अनन्तानन्त हैं और वे समस्त लोकाकाशमें भरे हुए हैं।

१७२ एक जीव कितना बड़ा है?

१७२ एक जीव प्रदेशोंकी अपेक्षा लोकाकाशके बराबर है परंतु संकोच विस्तारके कारण अपने शरीरके प्रमाण है। और मुक्तजीव अन्तके शरीर प्रमाण हैं।

१७३ लोकाकाशके बराबर कौनसा जीव है?

१७३ मोक्ष जानेसे पहिले समुद्घात करनेवाला जीव लोकाकाशके बराबर होता है।

१७४ समुद्घात किसको कहते हैं?

१७४ मूलशरीरको विना छोड़े जीवके प्रदेशोंके बाहर निकलनेको समुद्घात कहते हैं।

१७५ अस्तिकाय किसको कहते हैं?

१७५ बहुप्रदेशी द्रव्यको अस्तिकाय कहते हैं।

१७६ अस्तिकाय कितने हैं?

१७६ पाँच हैं—जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म और आकाश। इन पांचोंद्रव्योंको पञ्चास्तिकाय कहते हैं। कालद्रव्य बहुप्रदेशी नहीं है इसलिये वह अस्तिकाय भी नहीं है।

१७७ यदि पुद्गलपरमाणु एकप्रदेशी है तो वह अस्तिकाय कैसे हुवा?

१७७ पुद्गलपरमाणु शक्तिकी अपेक्षासे अस्तिकाय है। अर्थात् स्कंधरूपमें होकर बहुप्रदेशी हो जाता है इसलिये उपचारसे अस्तिकाय है।

१७८ अनुजीवी गुण किसको कहते हैं?

१७८ भावस्वरूप गुणको अनुजीवी गुण कहते हैं।

जैसे सम्यक्त्व, चारित्र, सुख, चेतना, स्पर्श, रस, गंध वर्णादिक ।

१७९ प्रतिजीवी गुण किसको कहते हैं?

१७९ वस्तुके अभावस्वरूप धर्मको प्रतिजीवी गुण कहते हैं। जैसे—नास्तित्व, अमूर्त्तत्व; अचेतनत्व वगैरह।

१८० अभाव किसको कहते हैं?

१८० एक पदार्थकी दूसरे पदार्थमें गैरमौजूदगीको अभाव कहते हैं ।

१८१ अभावके कितने भेद हैं?

१८१ चार हैं—प्रागभाव, प्रध्वंसाभाव, अन्योन्याभाव, और अत्यन्ताभाव ।

१८२ प्रागभाव किसको कहते हैं?

१८२ वर्त्तमान पर्यायका पूर्व पर्यायमें जो अभाव उसको प्रागभाव कहते हैं ।

१८३ प्रध्वंसाभाव किसको कहते हैं?

१८३ आगामी पर्यायमें वर्तमान पर्यायके अभावको प्रध्वंसाभाव कहते हैं ।

१८४ अन्योन्याभाव किसको कहते हैं ?

१८४ पुद्गलद्रव्यकी एक वर्त्तमान पर्यायमें दूसरे पुद्गलकी वर्त्तमान पर्यायके अभावको अन्योन्याभाव कहते हैं।

१८५ अत्यन्ताभाव किसको कहते हैं ?

१८५ एकद्रव्यमें दूसरे द्रव्यके अभावको अत्यन्ताभाव कहते हैं।

अनुजीवीगुण ।

१८६ जीवके अनुजीवी गुण कौनसे हैं ?

१८६ चेतना, सम्यक्त्व, चारित्र, सुख, वीर्य, भव्यत्व, अभव्यत्व, जीवत्व, वैभाविक, कर्तृत्व, भोक्तृत्व, वगैरह अनन्तगुण हैं।

१८७ जीवके प्रतिजीवी गुण कौनसे हैं ?

१८७ अव्याबाध, अवगाह, अगुरुलघु, सूक्ष्मत्व, नास्तित्व इत्यादि।

१८८ चेतना किसको कहते हैं ?

१८८ जिसमें पदार्थोंका प्रतिभास (जानना) हो, उसको चेतना कहते हैं।

१८९ चेतनाके कितने भेद हैं?

१८९ दो हैं—दर्शनचेतना और ज्ञानचेतना।

१९० दर्शनचेतना किसको कहते हैं?

१९० जिसमें महासत्ताका (सामान्यका) प्रतिभास (ज्ञान) हो, उसको दर्शनचेतना कहते हैं। जैसे—कुछ है।

१९१ महासत्ता किसको कहते हैं?

१९१ समस्त पदार्थोंके अस्तित्वगुणके ग्रहण करनेवाली सत्ताको महासत्ता कहते हैं।

१९२ ज्ञानचेतना किसको कहते हैं?

१९२ अवान्तरसत्ताविशिष्ट विशेषपदार्थको विषय करनेवाली चेतनाको ज्ञानचेतना कहते हैं।

१९३ अवान्तरसत्ता किसको कहते हैं?

१९३ किसी विवक्षित पदार्थकी सत्ताको अवान्तरसत्ता कहते हैं।

१९४ दर्शनचेतनाके कितने भेद हैं?

१९४ चार हैं—चक्षुर्दर्शन, अचक्षुर्दर्शन, अवधिदर्शन और केवलदर्शन ।

१९५ ज्ञानचेतनाके कितने भेद हैं?

१९५ पाँच हैं—मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्ययज्ञान और केवलज्ञान ।

१९६ मतिज्ञान किसको कहते हैं?

१९६ इन्द्रिय और मनकी सहायतासे जो ज्ञान हो, उसको मतिज्ञान कहते हैं ।

१९७ मतिज्ञानके कितने भेद हैं?

१९७ दो हैं—सांव्यवहारिकप्रत्यक्ष और परोक्ष ।

१९८ परोक्षमतिज्ञानके कितने भेद हैं?

१९८ चार हैं—स्मृति, प्रत्यभिज्ञान, तर्क और अनुमान ।

१९९ मतिज्ञानके दूसरीतरहसे कितने भेद हैं?

१९९ चार हैं—अवग्रह, ईहा, अवाय, धारणा ।

२०० अवग्रह किसको कहते हैं?

२०० इन्द्रिय और पदार्थके योग्य स्थानमें (मौजूद

जगहमें) रहनेपर सामान्यप्रतिभासरूप दर्शनके पीछे अवान्तरसत्तासहित विशेष वस्तुके ज्ञानको अवग्रह कहते हैं। जैसे—यह मनुष्य है।

२०१ ईहाज्ञान किसको कहते हैं?

२०१ अवग्रहसे जानेहुए पदार्थके विशेषमें उत्पन्न हुए संशयको दूर करते हुए अभिलाषस्वरूप ज्ञानको ईहा कहते हैं। यह ज्ञान इतना कमजोर है कि किसी पदार्थकी ईहा होकर छूट जाय, तो उसके विषयमें कालान्तरमें संशय और विस्मरण हो जाता है। जैसे——ये ठाकुरदासजी हैं।

२०२ अवाय किसको कहते हैं?

२०२ ईहासे जानेहुए पदार्थमें यह वही है अन्य नहीं है ऐसे मजबूत ज्ञानको अवाय कहते हैं। अवायसे जानेहुए पदार्थमें संशय तो नहीं होता किंतु विस्मरण हो जाता है। जैसे—ये ठाकुरदासजी ही हैं और नहीं हैं।

२०३ धारणा किसको कहते हैं?

२०३ जिस ज्ञानसे जानेहुए पदार्थमें कालान्तरमें संशय तथा विसरण नहीं होय उसे धारणा कहते हैं।

२०४ मतिज्ञानके विषयभूत पदार्थोंके कितने भेद हैं।

२०४ दो हैं—व्यक्त और अव्यक्त।

२०५ अवग्रहादिक ज्ञान दोनों ही प्रकारके पदार्थोंमें होते हैं या कैसे?

२०५ व्यक्त पदार्थके अवग्रहादिक चारों ही होते हैं परन्तु अव्यक्त पदार्थका सिर्फ अवग्रह ही होता है।

२०६ अर्थावग्रह किसको कहते हैं?

२०६ व्यक्त पदार्थके अवग्रहको अर्थावग्रह कहते हैं।

२०७ व्यंजनावग्रह किसको कहते हैं?

२०७ अव्यक्त पदार्थके अवग्रहको व्यञ्जनावग्रह कहते हैं।

२०८ व्यंजनावग्रह अर्थावग्रहकी तरह सब इन्द्रियों और मनद्वारा होता है या कैसे?

२०८ व्यञ्जनावग्रह चक्षु और मनके सिवाय बाकी-की सब इन्द्रियोंसे होता है ।

२०९ व्यक्त और अव्यक्त पदार्थोंके कितने भेद हैं?

२०९ हरएकके बारह २ भेद हैं—बहु, एक, बहु-विध, एकविध, क्षिप्र, अक्षिप्र, निःसृत, अनिःसृत, उक्त, अनुक्त, ध्रुव, अध्रुव ।

२१० श्रुतज्ञान किसको कहते हैं?

२१० मतिज्ञानसे जानेहुए पदार्थसे संबन्ध लिये हुए किसी दूसरे पदार्थके ज्ञानको श्रुतज्ञान कहते हैं । जैसे—'घट' शब्द सुननेके अनंतर उत्पन्न हुआ कंबु-ग्रीवादिरूप घटका ज्ञान ।

२११ दर्शन कब होता है?

२११ ज्ञानके पहिले दर्शन होता है । विना दर्शनके अल्पज्ञ जनोंके ज्ञान नहीं होता परंतु सर्वज्ञ देवके ज्ञान और दर्शन साथ २ होते हैं ।

२१२ चक्षुर्दर्शन किसको कहते हैं?

२१२ नेत्रजन्य मतिज्ञानसे पहिले सामान्य प्रतिभास या अवलोकनको चक्षुर्दर्शन कहते हैं।

२१३ अचक्षुर्दर्शन किसको कहते हैं?

२१३ चक्षुके (नेत्रके) सिवाय अन्य इन्द्रियों और मनसंबंधी मतिज्ञानके पहिले होनेवाले सामान्य अवलोकनको अचक्षुर्दर्शन कहते हैं।

२१४ अवधिदर्शन किसको कहते हैं?

२१४ अवधिज्ञानसे पहिले होनेवाले सामान्य अवलोकनको अवधिदर्शन कहते हैं।

२१५ केवलदर्शन किसको कहते हैं?

२१५ केवलज्ञानके साथ होनेवाले सामान्य अवलोकनको केवलदर्शन कहते हैं।

२१६ सम्यक्त्व गुण किसको कहते हैं?

२१६ जिस गुणके प्रगट होनेपर अपने शुद्ध आत्माका प्रतिभास हो उसको सम्यक्त्व गुण कहते हैं।

२१७ चारित्र किसको कहते हैं?

२१७ बाह्य और अभ्यन्तर क्रियाके निरोधसे प्रादुर्भूत आत्माकी शुद्धिविशेषको चारित्र कहते हैं।

२१८ बाह्यक्रिया किसको कहते हैं?

२१८ हिंसा करना, चोरी करना, झूठ बोलना, मैथुन करना और परिग्रहसंचय करना।

२१९ आभ्यन्तरक्रिया किसको कहते हैं?

२१९ योग और कषायको आभ्यन्तरक्रिया कहते हैं।

२२० योग किसको कहते हैं?

२२० मन वचन कायके निमित्तसे आत्माके प्रदेशोंके चंचल होनेको योग कहते हैं।

२२१ कषाय किसको कहते हैं?

२२१ क्रोधमानमायालोभरूप आत्माके विभाव परिणामोंको कषाय कहते हैं।

२२२ चारित्रके कितने भेद हैं?

२२२ चार हैं—स्वरूपाचरणचारित्र, देशचारित्र सकलचारित्र और यथाख्यातचारित्र।

२२३ स्वरूपाचरणचारित्र किसको कहते हैं?

२२३ शुद्धात्मानुभवनसे अविनाभावी चारित्रविशेषको स्वरूपाचरणचारित्र कहते हैं ।

२२४ देशचारित्र किसको कहते हैं ?

२२४ श्रावकके व्रतोंको देशचारित्र कहते हैं ।

२२५ सकलचारित्र किसको कहते हैं ?

२२५ मुनियोंके व्रतोंको सकलचारित्र कहते हैं ।

२२६ यथाख्यातचारित्र किसको कहते हैं ?

२२६ कषायोंके सर्वथा अभावसे प्रादुर्भूत आत्माकी शुद्धिविशेषको यथाख्यातचारित्र कहते हैं ।

२२७ सुख किसको कहते हैं ?

२२७ आल्हादस्वरूप आत्माके परिणामविशेषको सुख कहते हैं ।

२२८ वीर्य किसको कहते हैं ?

२२८ आत्माकी शक्तिको (बलको) वीर्य कहते हैं ।

२२९ भव्यत्व गुण किसको कहते हैं ?

२२९ जिस शक्तिके निमित्तसे आत्माके सम्यग्दर्शन,

सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र प्रगट होनेकी योग्यता हो उसको भव्यत्व गुण कहते हैं।

२३० अभव्यत्व गुण किसको कहते हैं?

२३० जिस शक्तिके निमित्तसे आत्माके सम्यग्दर्शन ज्ञानचारित्र प्रगट होनेकी योग्यता न हो उसको अभव्यत्व गुण कहते हैं।

२३१ जीवत्व गुण किसको कहते हैं?

२३१ जिस शक्तिके निमित्तसे आत्मा प्राण धारण-करै उसको जीवत्व गुण कहते हैं।

२३२ प्राण किसको कहते हैं?

२३२ जिनके संयोगसे यह जीव जीवन अवस्थाको प्राप्त हो और वियोगसे मरण अवस्थाको प्राप्त हो उनको प्राण कहते हैं।

२३३ प्राणके कितने भेद हैं?

२३३ दो हैं—द्रव्यप्राण और भावप्राण।

२३४ द्रव्यप्राणोंके कितने भेद हैं?

२३४ दश हैं—मन, वचन, काय, स्पर्शनइन्द्रिय,

रसनाइन्द्रिय, घ्राणइन्द्रिय, चक्षुरिन्द्रिय, श्रोत्रइन्द्रिय, श्वासोच्छ्वास, आयु ।

२३५ भावप्राण किसको कहते हैं ?

२३५ आत्माके चेतना और बल गुणको भावप्राण कहते हैं ।

२३६ किस जीवके कितने प्राण होते हैं ?

२३६ एकेंद्रिय जीवके चार प्राण—स्पर्शनेन्द्रिय, कायबल, श्वासोच्छ्वास और आयु । द्वीन्द्रियके छह प्राण—स्पर्शनेन्द्रिय, कायबल, श्वासोच्छ्वास, आयु, रसनेन्द्रिय, और वचन । त्रीन्द्रियके सात प्राण—पूर्वोक्त छह और घ्राणेन्द्रिय । चतुरिन्द्रियके आठ प्राण—पूर्वोक्त सात और एक चक्षुरिन्द्रिय । पंचेन्द्रिय असैनीके नौ प्राण—पूर्वोक्त आठ और एक श्रोत्रेन्द्रिय । सैनीपंचेन्द्रियके दश प्राण—पूर्वोक्त ९ और एक मन ।

२३७ (क) भावप्राणके कितने भेद हैं ?

२३७ (क) दो हैं—भावेन्द्रिय और बलप्राण ।

२३७ (ख) भावेन्द्रियके कितने भेद हैं ?

२३७ (ख) पांच हैं—स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और श्रोत्र।

२३८ वलप्राणके कितने भेद हैं?

२३८ तीन हैं—मनोबल, वचनबल, कायबल।

२३९ वैभाविकगुण किसको कहते हैं?

२३९ वैभाविकगुण उस शक्तिको कहते हैं जिसके निमित्तसे दूसरे द्रव्यके संवंध होनेपर आत्मामें विभावपरिणति हो।

प्रतिजीवी गुण।

२४० अव्यावाध प्रतिजीवीगुण किसको कहते हैं?

२४० साता और असातारूप आकुलताके अभावको अव्यावाधप्रतिजीवीगुण कहते हैं।

२४१ अवगाह प्रतिजीवीगुण किसको कहते हैं?

२४१ परतन्त्रताके अभावको अवगाह प्रतिजीवीगुण कहते हैं।

२४२ अगुरुलघुत्व प्रतिजीवीगुण किसको कहते हैं?

२४२ उच्चता और नीचताके अभावको अगुरुलघुत्व प्रतिजीवीगुण कहते हैं।

२४३ सूक्ष्मत्व प्रतिजीवीगुण किसको कहते हैं?

२४३ इन्द्रियोंके विषयरूप स्थूलताके अभावको सूक्ष्मत्व प्रतिजीवीगुण कहते हैं।

इति द्वितीयोऽध्यायः समाप्तः ॥ २ ॥

अथ तृतीयोऽध्यायः प्रारभ्यते।

२४४ जीवके कितने भेद हैं?

२४४ दो हैं—संसारी और मुक्त।

२४५ संसारी जीव किसको कहते हैं?

२४५ कर्मसहित जीवको संसारी जीव कहते हैं।

२४६ मुक्त जीव किसको कहते हैं?

२४६ कर्मरहित जीवको मुक्त जीव कहते हैं।

२४७ कर्म किसको कहते हैं?

२४७ जीवके रागद्वेषादिक परिणामोंके निमित्तसे कार्माणवर्गणारूप जो पुद्गलस्कंध जीवके साथ बंधको प्राप्त होते हैं उनको कर्म कहते हैं।

२४८ बंधके कितने भेद हैं?

२४८ चार हैं—प्रकृतिबंध, प्रदेशबंध, स्थितिबंध और अनुभागबंध।

२४९ इन चारों प्रकारोंके बंधोंका कारण क्या है?

२४९ प्रकृति और प्रदेशबंध योगसे होते हैं। स्थिति और अनुभागबंध कषायसे होते हैं।

२५० प्रकृतिबंध किसको कहते हैं?

२५० कर्ममें आत्माके घातनेकी शक्तिके पड़नेको प्रकृतिबंध कहते हैं।

२५१ प्रकृतिबंधके कितने भेद हैं?

२५१ आठ हैं—ज्ञानावरण १, दर्शनावरण २,

वेदनीय ३, मोहनीय ४, आयु ५, नाम ६, गोत्र ७, अंतराय ८।

२५२ ज्ञानावरण किसको कहते हैं?

२५२ जो कर्म आत्माके ज्ञानगुणको घातै उसको ज्ञानावरण कर्म कहते हैं।

२५३ ज्ञानावरण कर्मके कितने भेद हैं?

२५३ पांच हैं—मतिज्ञानावरण, श्रुतज्ञानावरण, अवधिज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण और केवलज्ञानावरण।

२५४ दर्शनावरण कर्म किसको कहते हैं?

२५४ जो आत्माके दर्शन गुणको घातै उसको दर्शनावरण कर्म कहते हैं।

२५५ दर्शनावरण कर्मके कितने भेद हैं?

२५५ नव हैं—चक्षुर्दर्शनावरण, अचक्षुर्दर्शनावरण, अवधिदर्शनावरण, केवलदर्शनावरण, निद्रा, निद्रानिद्रा, प्रचला, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि।

२५६ वेदनीय कर्म किसको कहते हैं?

२५६ जिस कर्मके फलसे जीवके आकुलता होवै अर्थात् जो अव्यावाध गुणको घातै उसको वेदनीय कर्म कहते हैं।

२५७ वेदनीय कर्मके कितने भेद हैं?

२५७ दो हैं—सातावेदनीय और असातावेदनीय।

२५८ मोहनीय कर्म किसको कहते हैं?

२५८ जो आत्माके सम्यवत्व और चारित्र गुणको घातै उसको मोहनीय कर्म कहते हैं।

२५९ मोहनीय कर्मके कितने भेद हैं?

२५९ दो हैं—दर्शनमोहनीय और चारित्रमोहनीय।

२६० दर्शनमोहनीय किसको कहते हैं?

२६० आत्माके सम्यक्त्व गुणको जो घातै उसे दर्शनमोहनीय कर्म कहते हैं।

२६१ दर्शनमोहनीय कर्मके कितने भेद हैं?

२६१ तीन हैं—मिथ्यात्व, सम्यक्मिथ्यात्व, और सम्यक् प्रकृति।

२६२ मिथ्यात्व किसको कहते हैं?

२६२ जिसकर्मके उदयसे जीवके अतत्त्वश्रद्धान हो उसको मिथ्यात्व कहते हैं।

२६३ सम्यक्मिथ्यात्व किसको कहते हैं?

२६३ जिसकर्मके उदयसे मिलेहुए परिणाम हों जिनको न तौ सम्यक्त्वरूप कह सकते हैं और न मिथ्यात्वरूप उसको सम्यक्मिथ्यात्व कहते हैं।

२६४ सम्यक्प्रकृति किसको कहते हैं?

२६४ जिस कर्मके उदयसे सम्यक्त्व गुणका मूलघात तौ न हो परंतु चल मलादिक दोष उपजैं, उसको सम्यक्प्रकृति कहते हैं।

२६५ चारित्रमोहनीय किसको कहते हैं?

२६५ जो आत्माके चारित्र गुणको घाते उसको चारित्र मोहनीय कहते हैं।

२६६ चारित्रमोहनीयके कितने भेद हैं?

२६६ दो हैं—कषाय और नोकषाय (किंचित्कषाय)।

२६७ कषायके कितने भेद हैं?

२६७ सोलह— अनन्तानुबन्धी क्रोध अनंतानुबंधी

मान, अनंतानुबंधी माया, अनंतानुबंधी लोभ, अप्रत्याख्यानावरण क्रोध, अप्रत्याख्यानावरण मान, अप्रत्याख्यानावरण माया, अप्रत्याख्यानावरणीय लोभ, प्रत्याख्यानावरण क्रोध, प्रत्याख्यानावरण मान, प्रत्याख्यानावरण माया, प्रत्याख्यानावरण लोभ, संज्वलन क्रोध, संज्वलन मान, संज्वलन माया और संज्वलन लोभ।

२६८ नोकषायके कितने भेद हैं?

२६८ नव—हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्रीवेद, पुरुषवेद, नपुंसकवेद।

२६९ अनन्तानुबंधी क्रोध मान माया लोभ किनको कहते हैं?

२६९ जो आत्माके स्वरूपाचरणचारित्रको घातैं उनको अनन्तानुबन्धी क्रोध मान माया लोभ कहते हैं।

२७० अप्रत्याख्यानावरण क्रोध मान माया लोभ किनको कहते हैं?

२७० जो आत्माके देशचारित्रको घातैं उनको अप्रत्याख्यानावरण क्रोध मान माया लोभ कहते हैं।

२७१ प्रत्याख्यानावरण क्रोध मान माया लोभ किनको कहते हैं ?

२७१ जो आत्माके सकलचारित्रको घातैं उनको प्रत्याख्यानावरण क्रोध मान माया लोभ कहते हैं।

२७२ संज्वलन क्रोध मान माया लोभ और नोकषाय किनको कहते हैं ?

२७२ जो आत्माके यथाख्यात चारित्रको घातैं उ-उनको संज्वलन और नोकषाय कहते हैं।

२७३ आयुकर्म किसको कहते हैं ?

२७३ जो कर्म आत्माको नारक, तिर्यंच, मनुष्य और देवके शरीरमें रोक रक्खै उसको आयुकर्म कहते हैं अर्थात्—आयुकर्म आत्माके अवगाह गुणको घातता है।

२७४ आयुकर्मके कितने भेद हैं?

२७४ चार—नरकायु,तिर्यंचायु,मनुष्यायु और देवायु।

२७५ नामकर्म किसको कहते हैं ?

२७५ जो जीवको गत्यादिक नानारूप परिण-

मावै, अथवा शरीरादिक बनावै। भावार्थ-नामकर्म आत्माके सूक्ष्मत्वगुणको घातता है।

२७६ नामकर्मके कितने भेद हैं?

२७६ तिरानवै—चारगति–(नरक, तिर्यक्, मनुष्य, देव) पांच जाति (एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय पंचेन्द्रिय) पांच शरीर (औदारिक, वैक्रियिक, आहारक, तैजस, कार्माण) तीन आंगोपांग–(औदारिक, वैक्रियक, आहारक) एक निर्माण कर्म, पांच बन्धन कर्म—(औदारिकबंधन, वैक्रियिकबंधन, आहाररकबन्धन, तैजसबन्धन, कार्माणबंधन,) पांच संघात —(औदारिक, वैक्रियिक, आहारक, तैजस, कार्माण) छह संस्थान—(समचतुरस्र संस्थान, न्यग्रोधपरिमंडल संस्थान, स्वाति संस्थान, कुब्जक संस्थान, वामन संस्थान, हुंडक संस्थान) छह संहनन–(वज्रर्षभनाराच संहनन, वज्रनाराच संहनन, नाराच संहनन, अर्द्धनाराच संहनन, कीलक संहनन, असंप्राप्तासृपाटिका संहनन) पांच वर्ण कर्म—(कृष्ण, नील, रक्त, पीत, स्वेत) दो गंध कर्म—

[सुगंध दुर्गंध] पांच रसकर्म—(खट्टा, मीठा, कडुआ, कषायला, चर्परा) आठ स्पर्श—(कठोर, कोमल, हलका, भारी ठंडा, गरम, चिकना, रूखा) चार आनुपूर्व्य—(नरक, तिर्यंच, मनुष्य, देव) एक अगुरुलघु कर्म, एक उपघात कर्म, एक परघात कर्म, एक आताप कर्म, एक उद्योत कर्म, दो विहायोगति (एक मनोज्ञ, दूसरा अमनोज्ञ) एक उच्छ्वास, एक त्रस, एक स्थावर, एकवादर, एक सूक्ष्म, एक पर्याप्त कर्म, एक अपर्याप्त कर्म, एक प्रत्येक नामकर्म, एक साधारण नामकर्म, एक स्थिर नामकर्म, एक अस्थिर नामकर्म, एक शुभ नामकर्म, एक अशुभ नामकर्म, एक सुभग नामकर्म, एक दुर्भग नामकर्म, एक सुस्वर नामकर्म, एक दुःस्वर नामकर्म, एक आदेय नामकर्म, एक अनादेय नामकर्म, एक यशःकीर्ति नामकर्म, एक अयशःकीर्ति नामकर्म, एक तीर्थंकर नामकर्म ।

२७७ गति नामकर्म किसको कहते हैं?

२७७ जो कर्म जीवका आकार नारकी, तिर्यंच, मनुष्य और देवके समान बनावै ।

२७८ जाति किसको कहते हैं ?

२७८ अव्यभिचारी सदृशतासे एकरूप करनेवाले विशेपको जाति कहते हैं। अर्थात् वह सदृशधर्मवाले पदार्थोंको ही ग्रहण करता है।

२७९ जाति नामकर्म किसको कहते हैं ?

२७९ जिस कर्मके उदयसे एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय कहाजाय।

२८० शरीर नामकर्म किसको कहते हैं ?

२८० जिस कर्मके उदयसे आत्माके औदारिकादि शरीर बनैं।

२८१ निर्माण कर्म किसको कहते हैं ?

२८१ जिसके उदयसे अङ्गोपाङ्गकी ठीक २ रचना हो उसको निर्माणकर्म कहते हैं।

२८२ बंधन नामकर्म किसको कहते हैं ?

२८२ जिस कर्मके उदयसे औदारिकादिक शरीरोंके परमाणु परस्पर संबंधको प्राप्त हो उसको बन्धन नामकर्म कहते हैं।

२८३ संघात नामकर्म किसको कहते हैं।

२८३ जिसकर्मके उदयसे औदारिकादिक शरीरोंके परमाणु छिद्ररहित एकताको प्राप्त हों।

२८४ संस्थान नामकर्म किसको कहते हैं?

२८४ जिस कर्मके उदयसे शरीरकी आकृति (शकल) बनै उसको संस्थान नामकर्म कहते हैं।

२८५ समचतुरस्र संस्थान किसको कहते हैं?

२८५ जिस कर्मके उदयसे शरीरकी शकल ऊपर नीचें तथा बीचमें समभागसे शरीरके अवयव बनै।

२८६ न्यग्रोध परिमंडल किसको कहते हैं?

२८६ जिस कर्मके उदयसे जीवका शरीर बड़े वृक्षकी तरह नाभिसे नीचेके अंग छोटे और ऊपरके बड़े हों।

२८७ स्वाति संस्थान किसको कहते हैं?

२८७ ऊपरवाले जबाबसे बिलकुल विपरीत हो। जैसे साँपकीबाँ मी।

२८८ कुब्जक संस्थान किसको कहते हैं?

२८८ जिस कर्मके उदयसे कुवड़ा शरीर हो ।

२८९ वामन संस्थान किसको कहते हैं ?

२८९ जिस कर्मके उदयसे बौना शरीर हो ।

२९० हुंडक संस्थान किसको कहते हैं ?

२९० जिस कर्मके उदयसे शरीरके अंगोपांग किसी खास शकलके न हों ।

२९१ संहनननामकर्म किसको कहते हैं ?

२९१ जिस कर्मके उदयसे हाड़ोंका बंधनविशेष हो उसे संहनन नामकर्म कहते हैं ।

२९२ वज्रर्षभनाराच संहनन किसको कहते हैं?

२९२ जिस कर्मके उदयसे वज्रके हाड वज्रके वेठन और वज्रकी ही कीलियां हों ।

२९३ वज्रनाराच संहनन किसको कहते हैं ?

२९३ जिसकर्मके उदयसे वज्रके हाड और वज्रकी कीली हों । परंतु वेठन वज्रके न हों ।

२९४ नाराच संहनन किसको कहते हैं ?

२९४ जिस कर्मके उदयसे बेठन और कीली सहित हाड़ हों।

२९५ अर्द्धनाराच संहनन किसको कहते हैं?

२९५ जिसके उदयसे हाडोंकी संधि अर्द्धकीलित हो।

२९६ कीलक संहनन किसको कहते हैं?

२९६ जिस कर्मके उदयसे हाड परस्पर कीलित हों।

२९७ असंप्राप्तासृपाटिकासंहनन किसको कहते हैं?

२९७ जिस कर्मके उदयसे जुदे २ हाड नसोंसे बंधे हों परस्पर कीले हुये न हों।

२९८ वर्ण नामकर्म किसको कहते हैं?

२९८ जिस कर्मसे उदयसे शरीरमें रंग हो।

२९९ गंध नामकर्म किसको कहते हैं?

२९९ जिस कर्मके उदयसे शरीरमें गंध हो।

३०० रस नामकर्म किसको कहते हैं?

३०० जिस कर्मके उदयसे शरीरमें रस हो।

३०१ स्पर्श नामकर्म किसको कहते हैं?

२०१ जिस कर्मके उदयसे शरीरमें स्पर्श हों।

२०२ आनुपूर्वी नामकर्म किसे कहते हैं?

२०२ जिस कर्मके उदयसे मरणके पीछे और जन्मसे पहिले रास्तेमें अर्थात् विग्रहगतिमें मरणसे पहिलेके शरीरके आकार आत्माके प्रदेश रहैं।

२०३ अगुरुलघु नामकर्म किसे कहते हैं?

२०३ जिस कर्मके उदयसे लोहेके गोलेकी तरह भारी और आकके तूलकी तरह हलका न हो।

२०४ उपघात नामकर्म किसे कहते हैं?

२०४ जिस कर्मके उदयसे अपने अंगोंसे अपना घात हो।

२०५ परघात नामकर्म किसको कहते हैं?

२०५ जिस कर्मके उदयसे दूसरेका घात करनेवाले अंगोपांग हों।

२०६ आताप नामकर्म किसे कहते हैं?

२०६ जिस कर्मके उदयसे आतापरूप शरीर हो। जैसे सूर्यका प्रतिबिम्ब।

२०७ उद्योत नामकर्म किसे कहते हैं?

२०७ जिस कर्मके उदयसे उद्योतरूप शरीर हो।

२०८ विहायोगति नामकर्म किसको कहते हैं?

२०८ जिस कर्मके उदयसे आकाशमें गमन हो। उसके शुभ और अशुभ ऐसे दो भेद हैं।

२०९ उच्छ्वास नामकर्म किसको कहते हैं?

२०९ जिस कर्मके उदयसे श्वासोच्छ्वास हों।

२१० त्रस नामकर्म किसको कहते हैं?

२१० जिस कर्मके उदयसे द्वीन्द्रियादि जीवोंमें जन्म हो।

२११ स्थावर नामकर्म किसको कहते हैं?

२११ जिस कर्मके उदयसे पृथिवी अप तेज वायु और वनस्पतिमें जन्म हो।

२१२ पर्याप्तिकर्म किसको कहते हैं?

२१२ जिसके उदयसे अपने २ योग्य पर्याप्ति पूर्ण हो।

२१३ पर्याप्ति किसको कहते हैं?

२१३ आहारवर्गणा, भाषावर्गणा, मनोवर्गणाके

परमाणुओंको शरीर इन्द्रियादिरूप परिणमावनेकी शक्तिकी पूर्णताको पर्याप्ति कहते हैं?

३१४ पर्याप्तिके कितने भेद हैं?

३१४ छह।—प्रथम आहारपर्याप्ति(आहारवर्गणाके परमाणुओंको खल, रसभागरूप परिणामवनेको कारणभूत जीवकी शक्तिकी पूर्णताको आहारपर्याप्ति कहते हैं), दूसरी शरीरपर्याप्ति (जिन परमाणुओंको खलरूप परिणमाया था उनके हाड़ वगैरह कठिन अवयवरूप और जिनको रसरूप परिणमाया था उनको रुधिरादिक द्रवरूप परिणमावनेको कारणभूत जीवकी शक्तिकी पूर्णताको शरीरपर्याप्ति कहते हैं), तीसरी इन्द्रियपर्याप्ति (आहारवर्गणाके परमाणुओंको इन्द्रियके आकार परिणमावनेको तथा इन्द्रियद्वारा विषय ग्रहणकरनेको कारणभूत जीवकी शक्तिकी पूर्णताको इन्द्रियपर्याप्ति कहते हैं) चौथी श्वासोच्छ्वासपर्याप्ति (आहारवर्गणाके परमाणुओंको श्वासोच्छ्वासरूप परिणमावनेको कारणभूत जीवकी शक्तिकी पूर्णताको श्वासोच्छ्वासप-

र्याप्ति कहते हैं), पांचवीं भाषापर्याप्ति (भाषावर्गणाके परमाणुओंको वचनरूप परिणमावनेको कारणभूत जीवकी शक्तिकी पूर्णताको भाषापर्याप्ति कहते हैं), छट्ठी मनःपर्याप्ति (मनोवर्गणाके परमाणुओंको हृदयस्थानमें आठ पाँखुरीके कमलाकार मनरूप परिणमावनेको तथा उसके द्वारा यथावत् विचार करनेको कारणभूत जीवकी शक्तिकी पूर्णताको मनःपर्याप्ति कहते हैं)। एकेन्द्रियके भाषा और मनके विना चार पर्याप्ति होती हैं। द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और असैनी पंचेन्द्रियके मनके विना पांच पर्याप्ति होतीं हैं। सैनी पंचेन्द्रियके छहों पर्याप्ति होतीं हैं। इन सब पर्याप्तियोंके पूर्ण होनेका काल अन्तर्मुहूर्त्त है। और एक एक पर्याप्तिका भी अन्तर्मुहूर्त्त है। और सबका मिलकर भी अन्तर्मुहूर्त्त है। और पहेलेसे दूसरेका तथा दूसरेसे तीसरेका इसीतरह छट्ठेतक क्रमसे वड़ा २ अन्तर्मुहूर्त्त है। अपने अपने योग्य पर्याप्तियोंका प्रारंभ तो एकदमसे होता है किंतु पूर्णता क्रमसे होती है। जबतक किसी जीवकी शरीर-

पर्याप्ति पूर्ण तो न हो लेकिन नियमसे पूर्ण होनेवाली हो, तबतक उस जीवको **निर्वृत्त्यपर्याप्तक** कहते हैं। और जिसकी शरीरपर्याप्ति पूर्ण हो गई हो उसको **पर्याप्तक** कहते हैं। और जिसकी एक भी पर्याप्ति पूर्ण न हो तथा श्वासके अठारहवें भागमें ही मरण होनेवाला हो उसको **लब्ध्यपर्याप्तक** कहते हैं।

३१५ अपर्याप्ति नामकर्म किसको कहते हैं?

३१५ जिस कर्मके उदयसे लब्ध्यपर्याप्तक अवस्था हो उसको अपर्याप्ति नामकर्म कहते हैं।

३१६ प्रत्येक नामकर्म किसको कहते हैं?

३१६ जिसके उदयसे एक शरीरका एक स्वामी हो उसको प्रत्येक नामकर्म कहते हैं।

३१७ साधारण नामकर्म किसे कहते हैं?

३१७ जिस कर्मके उदयसे एक शरीरके अनेक जीव स्वामी (मालिक) हों उसको साधारण नामकर्म कहते हैं।

३१८ स्थिर नामकर्म और अस्थिर नामकर्म किसको कहते हैं?

३१८ जिस कर्मके उदयसे शरीरके धातु और उपधातु अपने २ ठिकाने रहैं उसको स्थिर नामकर्म कहते हैं और जिस कर्मके उदयसे शरीरके धातु और उपधातु अपने २ ठिकाने न रहैं उसको अस्थिर नाम कर्म कहते हैं।

३१९ शुभ नामकर्म किसको कहते हैं?

३१९ जिस कर्मके उदयसे शरीरके अवयव सुंदर हों उसको शुभ नामकर्म कहते हैं।

३२० अशुभनामकर्म किसको कहते हैं?

३२० जिसके उदयसे शरीरके अवयव सुंदर न हों उसको अशुभनामकर्म कहते हैं।

३२१ सुभगनामकर्म किसको कहते हैं?

३२१ जिस कर्मके उदयसे दूसरे जीव अपनेसे प्रीति करैं उसको सुभग नामकर्म कहते हैं।

३२२ दुर्भगनामकर्म किसको कहते हैं?

३२२ जिस कर्मके उदयसे दूसरे जीव अपनेसे दुश्मनी या वैर करैं उसको दुर्भग नामकर्म कहते हैं ।

३२३ सुस्वर नामकर्म किसको कहते हैं ?

३२३ जिसके उदयसे अच्छा स्वर हो उसको सुस्वर नामकर्म कहते हैं ।

३२४ दुःस्वर नामकर्म किसको कहते हैं ?

३२४ जिस कर्मके उदयसे अच्छा स्वर न हो उसको दुःस्वर नामकर्म कहते हैं ।

३२५ आदेय नामकर्म किसे कहते हैं ?

३२५ जिस कर्मके उदयसे कान्तिसहित शरीर उपजै उसको आदेय नामकर्म कहते हैं ।

३२६ अनादेयनामकर्म किसको कहते हैं ?

३२६ जिस कर्मके उदयसे कान्तिसहित शरीर न हो ।

३२७ यशःकीर्त्ति नामकर्म किसको कहते हैं?

३२७ जिस कर्मके उदयसे संसारमें जीवकी तारीफ हो उसको यशःकीर्ति नामकर्म कहते हैं ।

३२८ अयशःकीर्ति नामकर्म किसको कहते हैं?

३२८ जिस कर्मके उदयसे संसारमें जीवकी तारीफ न हो उसे अयशःकीर्त्ति नामकर्म कहते हैं।

३२९ तीर्थंकरनामकर्म किसको कहते हैं?

३२९ अर्हन्तपदके कारणभूत कर्मको तीर्थंकर नामकर्म कहते हैं।

३३० गोत्र कर्म किसको कहते हैं?

३३० जिस कर्मके उदयसे सन्तानके क्रमसे चले आये जीवके आचरणरूप उच्च नीच गोत्रमें जन्म हो।

३३१ गोत्र कर्मके कितने भेद हैं?

३३१ दो—उच्चगोत्र और नीचगोत्र।

३३२ उच्च गोत्रकर्म किसको कहते हैं?

३३२ जिस कर्मके उदयसे उच्च गोत्रमें जन्म हो।

३३३ नीच गोत्रकर्म किसको कहते हैं?

३३३ जिस कर्मके उदयसे नीच गोत्रमें जन्म हो।

३३४ अन्तराय कर्म किसको कहते हैं?

३३४ जो दानादिकमें विघ्न डाले।

३३५ अन्तराय कर्मके कितने भेद हैं?

३३५ पांच—दानान्तराय, लाभान्तराय, भोगान्तराय, उपभोगान्तराय और वीर्यान्तराय। हरएकका अर्थ जो हरएकमें विघ्न डाले।

३३६ पुण्य कर्म किसको कहते हैं?

३३६ जो जीवको इष्ट वस्तुकी प्राप्ति करावै।

३३७ पाप कर्म किसको कहते हैं?

३३७ जो जीवको अनिष्ट वस्तुकी प्राप्ति करावै।

३३८ घातिया कर्म किसको कहते हैं?

३३८ जो जीवके ज्ञानादिक अनुजीवी गुणोंको घातै उसे घातिया कर्म कहते हैं।

३३९ अघातिया कर्म किसको कहते हैं?

३३९ जो जीवके ज्ञानादिक अनुजीवीगुणोंको न घातै उसे अघातिया कर्म कहते हैं।

३४० सर्वघाति कर्म किसको कहते हैं?

३४० जो जीवके अनुजीवी गुणोंको पूरे तौरसे घातै ।

३४१ देशघाति कर्म किसको कहते हैं ?

३४१ जो जीवके अनुजीवी गुणोंको एकदेश घातै उसको देशघातिं कर्म कहते हैं ।

३४२ जीवविपाकी कर्म किसको कहते हैं ?

३४२ जिसका फल जीवमें हो ।

३४३ पुद्गलविपाकी कर्म किसको कहते हैं ?

३४३ जिसका फल पुद्गलमें (शरीरमें) हो ।

३४४ भवविपाकी कर्म किसको कहते हैं ?

३४४ जिसके फलसे जीव संसारमें रुकै ।

३४५ क्षेत्रविपाकी कर्म किसको कहते हैं ?

३४५ जिसके फलसे विग्रहगतिमें जीवका आकार पहिला सा बना रहै ।

३४६ विग्रहगति किसको कहते हैं ?

३४६ एक शरीरको छोडकर दूसरा शरीर ग्रहण करनेकेलिये जीवके जानेको विग्रहगति कहते हैं ।

३४७ घातिया कर्म कितने और कौन २ से हैं?

३४७ सैंतालीस—ज्ञानावरण ५, दर्शनावरण ९, मोहनीय २८, और अन्तराय ५=४७।

३४८ अघातिया कर्म कितने और कौन २ से हैं?

३४८ एकसौ एक—वेदनीय २, आयुः ४, नाम ९३, और गोत्र २=१०१

३४९ सर्वघातिया प्रकृति कितनी और कौन २ सी हैं?

३४९ इक्कीस हैं—ज्ञानावरणकी १ (केवलज्ञानावरण), दर्शनावरणकी ६ (केवलदर्शनावरण एक और निद्रा पांच), मोहनीयकी १४ (अनंतानुबधी ४ अप्रत्याख्यानावरण ४, प्रत्याख्यानावरण ४, मिथ्यात्व १ और सम्यग्मिथ्यात्व १)।

३५० देशघाति प्रकृति कितनी और कौन २ सी हैं?

३५० छब्बीस हैं—ज्ञानावरणकी ४ (मतिज्ञा-

नावरण, श्रुतज्ञानावरण, अवधिज्ञानावरण और मनः-पर्ययज्ञानावरण) दर्शनावरणकी ३ (चक्षुदर्शनावरण, अचक्षुर्दर्शनावरण और अवधिदर्शनावरण), मोहनीकी १४ (संज्वलन ४, नो कषाय ९, सम्यग्मिथ्यात्व १), अन्तरायकी ५।

३५१ क्षेत्रविपाकी प्रकृति कितनी और कौन २ सी हैं?

३५१ चार हैं—नरकगत्यानुपूर्वी, तिर्यग्गत्यानुपूर्वी, मनुष्यगत्यानुपूर्वी और देवगत्यानुपूर्वी।

३५२ भवविपाकी प्रकृति कितनी और कौन २ सी हैं?

३५२ चार हैं—नरकायु, तिर्यंचआयु, मनुष्यायु और देवायु।

३५३ जीवविपाकी प्रकृति कितनी और कौन २ सी हैं?

३५३ अठहत्तर हैं—घातियाकी ४७, गोत्रकी २, [illegible]ीयकी २, और नामकर्मकी २७ (तीर्थंकर प्रकृति,

उच्छ्वास, वादर, सूक्ष्म, पर्याप्ति, अपर्याप्ति, सुस्वर, दुःस्वर, आदेय, अनादेय, यशःकीर्त्ति, अयशःकीर्त्ति, त्रस, स्थावर, प्रशस्तविहायोगति, अप्रशस्तविहायोगति, सुभग, दुर्भग, गति ४, जाति ५)। सब मिलकर ७८।

३५४ पुद्गलविपाकी प्रकृति कितनी और कौन २ सी हैं?

३५४ बासठ हैं—(सर्व प्रकृति १४८ मेंसे क्षेत्रविपाकी ४, भवविपाकी ४, जीवविपाकी ७८ ऐसे सब मिलाकर ८६ प्रकृति घटानेसे शेष रहीं ६२ प्रकृति पुद्गलविपाकी हैं)।

३५५ पापप्रकृति कितनी और कौन २ सी हैं?

३५५ सौ हैं—घातिया ४७–असातावेदनीय १, नीचगोत्र १, नरकायु १ और नामकर्मकी ५० (नरकगति १, नरकगत्यानुपूर्वी १, तिर्यग्गति १, तिर्यग्गत्यानुपूर्वी १, जातिमेंसे आदिकी ४, संस्थान अंतके ५, संहनन अंतके ५, स्पर्शादिक २०, उपघात १, अप्रशस्तविहायोगति १, स्थावर १, सूक्ष्म १, अपर्याप्ति १, अना-

देय १, अयशःकीर्ति १, अशुभ १, दुर्भग १, दुःस्वर १, अस्थिर १, साधारण १),

३५६ पुण्यप्रकृति कितनी और कौन २ सी हैं?

३५६ अड़सठ हैं—कर्मकी समस्त प्रकृति १४८ जिनमेंसे पापकी १०० प्रकृति घटानेसे शेष रहीं ४८ और नामकर्मकी स्पर्शादि २० प्रकृति पुण्य और पाप दोनोंमें गिनी जाती है क्योंकि—बीसोंही स्पर्शादिक किसीको इष्ट किसीको अनिष्ट होते हैं इसलिये ४८ में स्पर्शादिक २० मिलानेसे ६८ पुण्य प्रकृति होती हैं।

३५७ स्थितिबंध किसको कहते हैं?

३५७ आत्माके साथ कर्मोंके रहनेकी मियादको स्थितिबंध कहते हैं।

३५८ आठों कर्मोंकी उत्कृष्ट स्थिति कितनी २ है?

३५८ ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदनीय, अन्तराय इन चारों कर्मकी उत्कृष्ट स्थिति तीस २ कोडाकोड़ी सागर है। मोहनीय कर्मकी सत्तर कोड़ाकोड़ी सागर है।

नामकर्म और गोत्रकर्मकी वीस २ कोड़ाकोड़ी सागर है और आयुकर्मकी तेतीस सागरकी है।

३५९ आठों कर्मोंकी जघन्य स्थिति कितनी २ है?

३५९ वेदनीयकी बारह मुहूर्त्त, नाम तथा गोत्रकी आठ २ मुहूर्त्त और शेषके समस्त कर्मोंकी अन्तर्मुहूर्त्त २ जघन्य स्थिति है।

३६० कोड़ाकोड़ी किसको कहते हैं?

३६० एक करोड़को एक करोड़से गुणाकरनेपर जो लब्ध हो उसको एक कोड़ाकोड़ी कहते हैं।

३६१ सागर किसको कहते हैं?

३६१ दश कोड़ाकोड़ी अद्धापल्योंका एक सागर होता है।

३६२ अद्धापल्य किसको कहते हैं?

३६२ दो हजार कोश गहरे और दो हजार कोश चौड़े गोल गड्ढेमें कैंचीसे जिसका दूसरा भाग न हो सकै ऐसे मेंढेके बालोंको भरना। जितने बाल उसमें समावै

उनमेंसे एक २ बालको सौ सौ वर्ष बाद निकालना। जितने वर्षोंमें वे सब बाल निकल जावें उतने वर्षोंके जितने समय हों उसको व्यवहारपल्य कहते हैं। व्यवहारपल्यसे असंख्यात गुणा उद्धारपल्य होता है। उद्धारपल्यसे असंख्यात गुणा अद्धापल्य होता है।

२६३ मुहूर्त्त किसको कहते हैं?

२६३ अड़तालीस मिनटका एक मुहूर्त्त होता है।

२६४ अन्तर्मुहूर्त्त किसको कहते हैं?

२६४ आवलीसे ऊपर और मुहूर्त्तसे नीचेके कालको अन्तर्मुहूर्त्त कहते हैं।

२६५ आवली किसको कहते हैं?

२६५ एक श्वासमें संख्यात आवली होतीं हैं।

२६६ श्वासोच्छ्वास किसको कहते हैं?

२६६ नीरोग पुरुषकी नाड़ीके एक वार चलनेको श्वासोच्छ्वास कहते हैं।

२६७ एक मुहूर्त्तमें कितने श्वासोच्छ्वास होते हैं?

३६७ तीन हजार सातसौ तिहत्तर (३७७३) होते हैं।

३६८ अनुभागबंध किसको कहते हैं?

३६८ फल देनेकी शक्तिकी हीनाधिकताको अनुभागबंध कहते हैं।

३६९ प्रदेशबंध किसको कहते हैं?

३६९ बंधनेवाले कर्मोंकी संख्याके निर्णयको प्रदेशबन्ध कहते हैं।

३७० उदय किसको कहते हैं?

३७० स्थितिको पूरी करके कर्मके फल देनेको उदय कहते हैं।

३७१ उदीरणा किसको कहते हैं?

३७१ स्थिति विना पूरी किये ही कर्मके फल देनेको उदीरणा कहते हैं।

३७२ उपशम किसको कहते हैं?

३७२ द्रव्य क्षेत्र काल भावके निमित्तसे कर्मकी शक्तिकी अनुद्भूतिको उपशम कहते हैं।

३७३ उपशमके कितने भेद हैं ?

३७३ दो हैं—एक अन्तःकरणरूप उपशम दूसरा सदवस्थारूप उपशम ।

३७४ अन्तःकरणरूप उपशम किसको कहते हैं ?

३७४ आगामी कालमें उदय आनेयोग्य कर्मपरमाणुओंको आगे पीछे उदय आनेयोग्य करनेको अन्तःकरणरूप उपशम कहते हैं ।

३७५ सदवस्थारूप उपशम किसको कहते हैं ?

३७५ वर्त्तमान समयको छोडकर आगामी कालमें उदय आनेवाले कर्मोंके सत्तामें रहनेको सदवस्थारूप उपशम कहते हैं ।

३७६ क्षय किसको कहते हैं ?

३७६ कर्मकी आत्यन्तिक निवृत्तिको क्षय कहते हैं ।

३७७ क्षयोपशम किसको कहते हैं ?

३७७ वर्त्तमान निषेकमें सर्वघाति स्पर्द्धकोंका उदयाभावी क्षय तथा देशघाती स्पर्द्धकोंका उदय और

आगामीकालमें उदय आनेवाले निषेकोंका सद्‌वस्थारूप उपशम ऐसी कर्मकी अवस्थाको क्षयोपशम कहते हैं।

३७८ निषेक किसको कहते हैं?

३७८ एक समयमें कर्मके जितने परमाणु उदयमें आवैं उन सबके समूहको निषेक कहते हैं।

३७९ स्पर्द्धक किसको कहते हैं?

३७९ वर्गणाओंके समूहको स्पर्द्धक कहते हैं।

३८० वर्गणा किसको कहते हैं?

३८० वर्गोंके समूहको वर्गणा कहते हैं।

३८१ वर्ग किसको कहते हैं?

३८१ समान अविभागप्रतिच्छेदोंके धारक प्रत्येक कर्मपरमाणुको वर्ग कहते हैं।

३८२ अविभागप्रतिच्छेद किसको कहते हैं?

३८२ शक्तिके अविभागी अंशको अविभागप्रतिच्छेद कहते हैं।

३८३ इस प्रकरणमें 'शक्ति'शब्दसे कौनसी शक्ति इष्ट है?

३८३ यहां शक्ति शब्दसे कर्मोंकी अनुभाग रूप अर्थात् फलदेनेकी शक्ति इष्ट है।

३८४ उदयाभावी क्षय किसको कहते हैं?

३८४ विना फल दिये आत्मासे कर्मके संवंध छूटनेको उदयाभावी क्षय कहते हैं।

३८५ उत्कर्षण किसको कहते हैं?

३८५ कर्मोंकी स्थितिके बढ़ जानेको उत्कर्षण कहते हैं।

३८६ अपकर्षण किसको कहते हैं?

३८६ कर्मोंकी स्थितिके घटनेको अपकर्षण कहते हैं।

३८७ संक्रमण किसको कहते हैं?

३८७ किसी कर्मके सजातीय एक भेदसे दूसरे भेदरूप हो जानेको संक्रमण कहते हैं।

३८८ समयप्रवद्ध किसको कहते हैं?

३८८ एक समयमें जितने कर्मपरमाणु बँधैं उन सबको समयप्रबद्ध कहते हैं।

३८९ गुणहानि किसको कहते हैं?

३८९ गुणाकाररूप हीन हीन द्रव्य जिसमें पाये जांय उसको गुणहानि कहते हैं। जैसे—किसी जीवने एक समयमें ६३०० तरेसठसौ परमाणुओंके समूहरूप समयप्रबद्धका बंध किया और उसमें ४८ समयकी स्थिति पड़ी, उसमें गुणहानियोंके समूहरूप नाना गुणहानि ६ उसमेंसे प्रथम गुणहानिके परमाणु ३२०० दूसरी गुणहानिके १६०० तीसरी गुणहानिके ८०० चौथीके ४०० पांचवींके २०० छट्ठीके १०० हैं। यहां उत्तरोत्तर गुणहानियोंमें गुणाकाररूप हीन २ परमाणु (द्रव्य) पाये जाते हैं इसलिये इसको गुणहानि कहते हैं।

३९० गुणहानिआयाम किसको कहते हैं?

३९० एक गुणहानिके समयके समूहको गुणहानि आयाम कहते हैं। जैसे—ऊपरके दृष्टांतमें ४८ सम-

यकी स्थितिमें ६ गुणहानि थीं तो ४८ में ६ का भाग देनेसे प्रत्येक गुणहानिका परिमाण ८ आया। यही गुणहानिआयाम कहलाता है।

२९१ नानागुणहानि किसको कहते हैं?

२९१ गुणहानियोंके समूहको नानागुणहानि कहते हैं। जैसे—ऊपरके दृष्टान्तमें आठ आठ समयकी छह गुणहानि हैं सो ही छह संख्या नानागुणहानिका परिमाण जानना।

२९२ अन्योन्याभ्यस्तराशि किसको कहते हैं?

२९२ नानागुणहानिप्रमाण दूए मांड़कर परस्पर गुणाकार करनेसे जो गुणनफल हो उसको अन्योन्याभ्यस्तराशि कहते हैं। जैसे—ऊपरके दृष्टांतमें ६ दूए मांडकर परस्पर गुणा करनेसे ६४ होते हैं। सो ही अन्योन्याभ्यस्तराशिका परिमाण जानना।

२९३ अन्तिम गुणहानिका परिमाण किसप्रकारसे निकालना?

२९३ एक घाट अन्योन्याभ्यस्त राशिका भाग सं-

मयप्रबद्धको देनेसे अंतिम गुणहानिके द्रव्यका परिमाण निकलता है। जैसे—६३०० में एक घाट ६४ का भाग देनेसे जो १०० पाये सो ही अन्तिम गुणहानिका द्रव्य है।

३९४ अन्य गुणहानियोंके द्रव्यका परिमाण किसप्रकार निकालना चाहिये?

३९४ अन्तिम गुणहानिके द्रव्यको प्रथम गुणहानिपर्यन्त दूना दूना करनेसे अन्यगुणहानियोंके द्रव्यका परिमाण निकलता है। जैसे-२००-४००-८००-१६००-३२००।

३९५ प्रत्येक गुणहानिमें प्रथमादि समयोंमें द्रव्यका परिमाण किस प्रकार होता है?

३९५ निषेकहारको चयसे गुणा करनेसे प्रत्येक गुणहानिके प्रथम समयका द्रव्य निकलता है और प्रथम समयके द्रव्यमेंसे एक एक चय घटानेसे उत्तरोत्तर समयोंके द्रव्यका परिमाण निकलता है। जैसे—निषेकहार १६ को चय ३२ से गुणा करनेपर प्रथम गुण-

हानिके प्रथम समयका द्रव्य ५१२ होता है और ५१२ मेंसे एक एक चय अर्थात् बत्तीस २ घटानेसे दूसरे समयके द्रव्यका परिमाण ४८०, तीसरेका ४४८ चौथेका ४१६ पांचवेंका ३८४ छट्ठेका ३५२ सातवेंका ३२० और आठवेंका २८८ निकलता है। इसी प्रकार द्वितीयादिक गुणहानियोंमें भी प्रथमादि समयोंके द्रव्यका परिमाण निकाललेना।

२९६ निषेकहार किसको कहते हैं?

२९६ गुणहानिआयामसे दूने परिमाणको निषेकहार कहते हैं। जैसे—गुणहानिआयाम ८ से दूने १६ को निषेकहार कहते हैं।

२९७ चय किसको कहते हैं?

२९७ श्रेणीव्यवहार गणितमें समान हानि वा समान वृद्धिके परिमाणको चय कहते हैं।

२९८ इस प्रकरणमें चयका परिमाण निकालनेकी क्या रीति है?

२९८ निषेकहारमें एक अधिक गुणहानिका प्र-

माण जोड़कर आधा करनेसे जो लब्ध आवे उसको गु-णहानिआयामसे गुणा करै। इसप्रकार गुणा करनेसे जो गुणनफल होय उसका भाग विवक्षित गुणहा-निके द्रव्यमें देनेसे विवक्षित गुणहानिके चयका परि-माण निकलता है। जैसे—निषेकहार १६ में एक-अधिक गुणहानिआयाम ९ जोड़नेसे २५ हुए। पच्चीसके आधे १२॥ को गुणहानिआयाम ८ से गुणाकार करनेसे १०० होते हैं। इस १०० का भाग विवक्षित प्रथम गुणहानिके द्रव्य ३२०० में देनेसे प्रथम गुणहानिसंबंधी चय ३२ आया। इसही प्रकार द्वितीय गुणहानिके चयका परिमाण १६, तृतीयका ८, चतुर्थका ४, पंचमका २ और अन्तिमका १ जानना।

३९९ अनुभागकी रचनाका क्रम क्या है?

३९९ द्रव्यकी अपेक्षासे जो रचना ऊपर बताई गई है उसमें प्रत्येक गुणहानिके प्रथमादि समय संबंधी द्रव्यको वर्गणा कहते हैं। और उन वर्गणाओंमें जो परमाणु हैं उनको वर्ग कहते हैं। प्रथम गुणहानिकी

प्रथम वर्गणामें जो ५१२ वर्ग हैं, उनमें अनुभागश-क्तिके अविभागप्रतिच्छेद समान हैं और वे द्वितीयादि वर्गणाओंके वर्गोंके अविभागप्रतिच्छेदोंकी अपेक्षा सबसे न्यून अर्थात् जघन्य हैं। द्वितीयादि वर्गणाके वर्गोंमें एक एक अविभागप्रतिच्छेदकी अधिकताके क्रमसे जिस वर्गणापर्यन्त एक एक अविभागप्रतिच्छेद बढ़ै वहांतकको वर्गणाओंके समूहका नाम एक स्पर्द्धक है और जिस वर्गणाके वर्गोंमें युगपत् अनेक अविभागप्रतिच्छेदोंकी वृद्धि होकर प्रथम वर्गणाके वर्गोंके अविभागप्रतिच्छेदोंकी संख्यासे दूनी संख्या हो जाय वहांसे दूसरे स्पर्द्धकका प्रारंभ समझना। इसही प्रकार जिन २ वर्गणाओंके वर्गोंमें प्रथम वर्गणाके वर्गोंके अविभागप्रतिच्छेदोंकी संख्यासे तिगुणे चौगुणे आदि अविभागप्रतिच्छेद होंय वहांसे तीसरे चौथे आदि स्पर्द्धकोंका प्रारंभ समझना। इसप्रकार एक गुणहानिमें अनेक स्पर्द्धक होते हैं।

४०० आस्रव किसको कहते हैं?

४०० बन्धके कारणको आस्रव कहते हैं ।

४०१ आस्रवके कितने भेद हैं?

४०१ चार हैं—द्रव्यबंधका निमित्त कारण १, द्रव्यबंधका उपादानकारण २, भावबंधका निमित्त कारण ३, भावबंधका उपादान कारण ४, ।

४०२ कारण किसको कहते हैं?

४०२ कार्यकी उत्पादक सामग्रीको कारण कहते हैं।

४०३ कारणके कितने भेद हैं?

४०३ दो हैं—एक समर्थ कारण दूसरा असमर्थ कारण ।

४०४ समर्थ कारण किसको कहते हैं?

४०४ प्रतिबंधकका अभाव होनेपर सहकारी समस्त सामग्रियोंके सद्भावको समर्थ कारण कहते हैं । समर्थ कारणके होनेपर अनंतर समयमें कार्यकी उत्पत्ति नियमसे होती है ।

४०५ असमर्थ कारण किसको कहते हैं?

४०५ भिन्न २ प्रत्येक सामग्रीको असमर्थ कारण कहते हैं। असमर्थ कारण कार्यका नियामक नहीं है।

४०६ सहकारी सामग्रीके कितने भेद हैं?

४०६ दो हैं—एक निमित्तकारण दूसरा उपादानकारण।

४०७ निमित्तकारण किसको कहते हैं?

४०७ जो पदार्थ स्वयं कार्यरूप न परिणमैं किंतु कार्यकी उत्पत्तिमें सहायक हों उनको निमित्तकारण कहते हैं। जैसे—घटकी उत्पत्तिमें कुंभकार, दंड, चक्र आदिक।

४०८ उपादानकारण किसको कहते हैं?

४०८ जो पदार्थ स्वयं कार्यरूप परिणमै उसको उपादानकारण कहते हैं। जैसे—घटकी उत्पत्तिमें मृत्तिका। अनादिकालसे द्रव्यमें जो पर्यायोंका प्रवाह चला आ रहा है उसमें अनन्तर पूर्वक्षणवर्त्ती पर्याय उपादान कारण है। और अनन्तर उत्तरक्षणवर्ती पर्याय कार्य है।

४०९ द्रव्यबंध किसको कहते हैं ?

४०९ कार्माणस्कंधरूप पुद्गलद्रव्यमें आत्माके साथ संबंध होनेकी शक्तिको द्रव्यबंध कहते हैं।

४१० भावबंध किसको कहते हैं ?

४१० आत्माके योगकषायरूप भावोंको भावबंध कहते हैं।

४११ द्रव्यबंधका निमित्तकारण क्या है ?

४११ आत्माके योगकषायरूप परिणाम द्रव्यबंधके निमित्तकारण हैं।

४१२ द्रव्यबंधका उपादानकारण क्या है ?

४१२ बंध होनेके पूर्वक्षणमें बंध होनेको सन्मुख कार्माणस्कन्धको द्रव्यबंधका उपादानकारण कहते हैं।

४१३ भावबंधका निमित्तकारण क्या है ?

४१३ उदय तथा उदीरणा अवस्थाको प्राप्त पूर्व-बद्ध कर्म भावबंधका निमित्त कारण है।

४१४ भावबंधका उपादानकारण क्या है ?

४१४ भावबंधके विवक्षित समयसे अनंतर पूर्वक्ष-

णवर्त्ती योगकषायरूप आत्माकी पर्यायविशेषको भावबं-धका उपादान कारण कहते हैं।

४१५ भावास्रव किसको कहते हैं?

४१५ द्रव्यबंधके निमित्तकारण अथवा भावबंधके उपादानकारणको भावास्रव कहते हैं।

४१६ द्रव्यास्रव किसको कहते हैं?

४१६ द्रव्यबंधके उपादानकारण अथवा भावबं-धके निमित्तकारणको द्रव्यास्रव कहते हैं।

४१७ प्रकृतिबंध और अनुभागबंधमें क्या भेद है?

४१७ प्रत्येक प्रकृतिके भिन्न २ उपादानशक्तियुक्त अनेकभेदरूप कार्माणस्कंधका आत्मासे संबंध होनेको प्रकृतिबंध कहते हैं। और उनही स्कंधोंमें फलदानशक्तिके तारतम्यको (न्यूनाधिकत्ताको) अनुभागबंध कहते हैं।

४१८ समस्त प्रकृतियोंके बंधका कारण सा-मान्यतया योग है या उसमें कुछ विशेषता है?

४१८ जिस प्रकार भिन्न २ उपादानशक्तियुक्त ना-

नाप्रकारके भोजनोंको मनुष्य हस्तद्वारा इच्छाविशेषपूर्वक ग्रहण करता है और विशेष इच्छाके अभावमें उदरपूरण करनेके लिये भोजनसामान्यका ग्रहण करता है, उसही प्रकार यह जीव विशेष कषायके अभावमें योगमात्रसे केवल सातावेदनीयरूप कर्मको ग्रहण करता है परंतु उस योग यदि किसी कपायविशेषसे अनुरंजित हो तो अन्यान्यप्रकृतियोंका भी बंध करता है।

४१९ प्रकृतिबंधके कारणत्वकी अपेक्षासे आस्रवके कितने भेद हैं?

४१९ पांच हैं—मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कपाय और योग।

४२० मिथ्यात्व किसको कहते हैं?

४२० मिथ्यात्व प्रकृतिके उदयसे अदेवमें देवबुद्धि, अतत्त्वमें तत्त्वबुद्धि, अधर्ममें धर्मबुद्धि, इत्यादि विपरीताभिनिवेशरूप जीवके परिणामको मिथ्यात्व कहते हैं।

४२१ मिथ्यात्वके कितने भेद हैं?

४२१ पांच हैं—ऐकान्तिक मिथ्यात्व, विपरीतमि-

थ्यात्व, सांशयिक मिथ्यात्व, आज्ञानिक मिथ्यात्व और वैनयिक मिथ्यात्व ।

४२२ ऐकान्तिक मिथ्यात्व किसको कहते हैं?

४२२ धर्मधर्मीके "यह ऐसा ही है अन्यथा नहीं" इत्यादि अत्यन्त अभिसन्निवेशको (अभिप्रायको) ऐकान्तिक मिथ्यात्व कहते हैं । जैसे—बौद्धमतावलंबी पदार्थको सर्वथा क्षणिक मानता है ।

४२३ विपरीतमिथ्यात्व किसको कहते हैं?

४२३ सग्रंथ निर्ग्रंथ है, केवली ग्रासाहारी है इत्यादि रुचिको विपरीतमिथ्यात्व कहते हैं ।

४२४ सांशयिक मिथ्यात्व किसको कहते हैं?

४२४ धर्म अहिंसालक्षण है या नहीं इत्यादि मतिद्वैविध्यको सांशयिक मिथ्यात्व कहते हैं ।

४२५ आज्ञानिक मिथ्यात्व किसको कहते हैं?

४२५ जहां हिताहितविवेकका कुछ भी सद्भाव नहीं हो उसको आज्ञानिकमिथ्यात्व कहते हैं । जैसे —पशुबधको धर्म समझना ।

४२६ वैनयिकमिथ्यात्व किसको कहते हैं ?

४२६ समस्त देव तथा समस्त मतोंमें समदर्शीप-नेको वैनयिकमिथ्यात्व कहते हैं ।

४२७ अविरति किसको कहते हैं ?

४२७ हिंसादिक पापोंमें तथा इन्द्रिय और मनके विषयोंमें प्रवृत्ति होनेको अविरति कहते हैं ।

४२८ अविरतिके कितने भेद हैं ?

४२८ तीन हैं—अनन्तानुबंधिकषायोदयजनित, अप्रत्याख्यानावरणकषायोदयजनित और प्रत्याख्याना-वरणकषायोदयजनित ।

४२९ प्रमाद किसको कहते हैं ?

४२९ संज्वलन और नोकषायके तीव्र उदयसे नि-रतीचार चारित्र पालनेमें अनुत्साहको तथा स्वरूपकी असावधानताको प्रमाद कहते हैं ।

४३० प्रमादके कितने भेद हैं ?

४३० पंद्रह भेद हैं—विकथा ४ (स्त्रीकथा, रा-ष्ट्रकथा, भोजनकथा, राजकथा), कषाय ४ (सं-

ज्वलनके तीव्रोदयजनित क्रोध, मान, माया, लोभ); इन्द्रियोंके विषय ५, निद्रा एक और स्नेह एक।

४३१ कषाय किसको कहते हैं?

४३१ संज्वलन और नोकषायके मंद उदयसे प्रादुर्भूत आत्माके परिणामविशेषको कषाय कहते हैं।

४३२ योग किसको कहते हैं?

४३२ मनोवर्गणा अथवा कायवर्गणा (आहारवर्गणा तथा कार्माणवर्गणा) और वचनवर्गणाके अवलंबनसे कर्म नोकर्मको ग्रहण करनेकी शक्तिविशेषको योग कहते हैं।

४३३ योगके कितने भेद हैं।

४३३ पंद्रह भेद हैं—मनोयोग ४ (सत्यमनोयोग, असत्यमनोयोग, उभयमनोयोग और अनुभयमनोयोग), काययोग ७ (औदारिक, औदारिकमिश्र, वैक्रियक, वैक्रियकमिश्र, आहारक, आहारकमिश्र और कार्माण), वचनयोग ४ (सत्यवचनयोग, असत्यवचनयोग, उभयवचनयोग और अनुभयवचनयोग)।

४३४ मिथ्यात्वकी प्रधानतासे किन २ प्रकृतियोंका बंध होता है?

४३४ सोलह प्रकृतियोंका बंध होता है–मिथ्यात्व, हुंडकसंस्थान, नपुंसकवेद, नरकगति, नरकगत्यानुपूर्वी, नरकायु, असंप्राप्तासृपाटिकासंहनन, जाति ४ (एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय), स्थावर, आताप, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारण।

४३५ अनंतानुबंधिकषायोदयजनित अविरतिसे किन २ प्रकृतियोंका बंध होता है?

४३५ पच्चीस प्रकृतियोंका बंध होता है—अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया, लोभ, स्त्यानगृद्धि, निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, दुर्भग, दुःस्वर, अनादेय, अप्रशस्तविहायोगति, स्त्रीवेद, नीचगोत्र, तिर्यग्गति, तिर्यग्गत्यानुपूर्वी, तिर्यगायु, उद्योत, संस्थान ४ (न्यग्रोध १ स्वाति, कुब्जक, वामन), संहनन ४ (वज्रनाराच, नाराच, अर्द्धनाराच, और कीलित)।

४३६ अप्रत्याख्यानावरणकषायोदयजनित अविरतिसे किन २ प्रकृतियोंका वंध होता है ?

४३६ दश प्रकृतियोंका—अप्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया, लोभ, मनुष्यगति, मनुष्यगत्यानुपूर्वी, मनुष्यायु, औदारिकशरीर, औदारिकांगोपांग और वज्रऋषभनाराचसंहनन।

४३७ प्रत्याख्यानावरणकषायोदयजनित अविरतिसे किन २ प्रकृतियोंका वंध होता है ?

४३७ चार प्रकृतियोंका—अर्थात्—प्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया, लोभ।

४३८ प्रमादसे कितनी प्रकृतियोंका वंध होता है ?

४३८ छह प्रकृतियोंका अर्थात् अस्थिर, अशुभ, असातावेदनीय, अयशःकीर्ति, अरति और शोक।

४३९ कषायके उदयसे कितनी प्रकृतियोंका वंध होता है ?

४३९ अट्ठावन प्रकृतियोंका—अर्थात्—देवायु १

निद्रा १ प्रचला १ तीर्थंकर १ निर्माण १ प्रशस्तवि-
हायोगति १ पंचेन्द्रियजाति १ तैजस शरीर १ कार्माण
शरीर १ आहारक शरीर १ आहारकांगोपांग १ स-
मचतुरस्त्र संस्थान १ वैक्रियक शरीर १ वैक्रियकां-
गोपांग १ देवगति १ देवगत्यानुपूर्वी १ रूप १ रस
१ गंध १ स्पर्श १ अगुरुलघु १ उपघात १ परघात
१ उच्छ्वास १ त्रस १ वादर १ पर्याप्त १ प्रत्येक १
स्थिर १ शुभ २ सुभग १ सुस्वर १ आदेय १ हास्य
१ रति १ जुगुप्सा १ भय १ पुरुषवेद १ संज्वलन
क्रोध १ मान १ माया १ लोभ १ मतिज्ञानावरण १
श्रुतज्ञानावरण १ अवधिज्ञानावरण १ मनःपर्ययज्ञाना-
वरण १ केवलज्ञानावरण १ चक्षुर्दर्शनावरण १
अचक्षुर्दर्शनावरण १ अवधिदर्शनावरण १ केवलदर्श-
नावरण १ दानान्तराय १ भोगान्तराय १ उपभो-
गान्तराय १ वीर्यान्तराय १ लाभान्तराय १ यश-
स्कीर्ति १ और उच्चगोत्र १ इन ५८ प्रकृतियोंका बंध
होता है ।

४४० योगके निमित्तसे किस प्रकृतिका बंध होता है?

४४० एक साता वेदनीयका बंध होता है।

४४१ कर्मप्रकृति सर्व १४८ हैं और कारण केवल १२० के लिखे सो २८ प्रकृतियोंका क्या हुआ?

४४१ स्पर्शादि २० की जगह ४ का ग्रहण किया गया है इसकारण १६ तो ये घटीं और पांचोंशरीरोंके पांचों बंधन पांचों संघातका ग्रहण नहिं किया गया इसकारण दश ये घटीं। और सम्यग्मिथ्यात्व तथा सम्यक्प्रकृति-मिथ्यात्व इन दो प्रकृतियोंका बंध नहिं होता क्योंकि सम्यग्दृष्टि जीव पूर्ववद्ध मिथ्यात्व प्रकृतिके तीनखंड करता है तब इन दो प्रकृतियोंका प्रादुर्भाव होता है इसकारण दो प्रकृतियां ये घट गईं।

४४२ द्रव्यास्रवके कितने भेद हैं?

४४२ दो हैं—एक साम्परायिक दूसरा ईर्यापथ।

४४३ साम्परायिक आस्रव किसको कहते हैं?

४४३ जो कर्म परमाणु जीवके कषायभावोंके निमित्तसे आत्मामें कुछ कालके लिये स्थितिको प्राप्त हों उनके आस्रवको साम्परायिक आस्रव कहते हैं।

४४४ ईर्यापथ आस्रव किसको कहते हैं?

४४४ जिन कर्मपरमाणुओंका बंध, उदय और निर्जरा एक ही समयमें हों उनके आस्रवको ईर्यापथ आस्रव कहते हैं।

४४५ इन दोनों प्रकारके आस्रवोंके स्वामी कौन २ हैं?

४४५ साम्परायिक आस्रवका स्वामी कषायसहित और ईर्यापथका स्वामी कषायरहित आत्मा होता है।

४४६ पुण्यास्रव और पापास्रवका कारण क्या हैं?

४४६ शुभ योगसे पुण्यास्रव और अशुभ योगसे पापास्रव होता है।

४४७ शुभ योग और अशुभ योग किसको कहते हैं?

४४७ शुभ परिणामसे उत्पन्न योगको शुभयोग और अशुभ परिणामसे उत्पन्न योगको अशुभ योग कहते हैं।

४४८ जिस समय जीवके शुभ योग होता है उस समय पापप्रकृतियोंका आस्रव होता है या नही?

४४८ होता है।

४४९ यदि होता है तो शुभ योग पापास्रवका भी कारण ठहरा?

४४९ नहीं ठहरा। क्योंकि; जिस समय जीवमें शुभ योग होता है उस समय पुण्यप्रकृतियोंमें स्थिति, अनुभाग अधिक पड़ता है और पापप्रकृतियोंमें कम पडता है और इस ही प्रकार जब अशुभ योग होता है तो पापप्रकृतियोंमें स्थिति अनुभाग अधिक पड़ता है और पुण्यप्रकृतियोंमें कम। दशाध्याय तत्त्वार्थसूत्रके छट्टे अध्यायमें ज्ञानावरणादि प्रकृतियोंके आस्रवके कारण जो तत्प्रदोषनिह्नवादिक कहे गये हैं उसका अभिप्राय यही है कि; उन २ भावोंसें उन २ प्रकृतियोंमें स्थिति

अनुभाग अधिक २ पड़ते हैं। अन्य जो ज्ञानावरणादिक पापप्रकृतियोंका आस्रव दशवें गुणस्थानतक सिद्धान्तशास्त्रमें कहा है उससे विरोध आवैगा अथवा वहां शुभयोगके अभावका प्रसंग आवैगा क्योंकि शुभयोग दशवें गुणस्थानसे पहिले २ ही होता है।

इति तृतीयोऽध्यायः समाप्तः।

अथ चतुर्थोऽध्यायः प्रारभ्यते।

४५० जीवके असाधारण भाव कितने हैं?

४५० पांच हैं—औपशमिक, क्षायिक, क्षायोपशमिक, औदयिक और परिणामिक।

४५१ औपशमिक भाव किसको कहते हैं?

४५१ जो किसी कर्मके उपशमसे हो उसको औपशमिक भाव कहते हैं।

४५२ क्षायिक भाव किसको कहते हैं?

४५२ जो किसी कर्मके क्षयसे उत्पन्न हो, उसको क्षायिक भाव कहते हैं।

४५३ क्षायोपशमिक भाव किसको कहते है ?

४५३ जो कर्मोंके क्षयोपशमसे हो उसको क्षायोपशमिक भाव कहते हैं।

४५४ औदयिक भाव किसको कहते हैं ?

४५४ जो कर्मोंके उदयसे हो उसको औदायिक भाव कहते हैं।

४५५ पारिणामिक भाव किसको कहते हैं ?

४५५ जो उपशम, क्षय, क्षयोपशम वा उदयकी अपेक्षा न रखता हुआ जीवका स्वभावमात्र हो उसको पारिणामिक भाव कहते हैं।

४५६ औपशमिक भावके कितने भेद हैं ?

४५६ दो हैं—एक सम्यक्त्वभाव, दूसरा चारित्र-भाव।

४५७ क्षायिकभावके कितने भेद हैं ?

४५७ नौ हैं—क्षायिक सम्यक्त्व, क्षायिक चारित्र, क्षायिक दर्शन, क्षायिक ज्ञान, क्षायिक दान, क्षायिक लाभ, क्षायिक भोग, क्षायिक उपभोग, क्षायिक वीर्य।

४५८ क्षायोपशमिक भावके कितने भेद हैं?

४५८ अठारह—सम्यक्त्व, चारित्र, चक्षुर्दर्शन, अचक्षुर्दर्शन, अवधिदर्शन, देशसंयम, मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्ययज्ञान, कुमतिज्ञान, कुश्रुतज्ञान, कुअवधिज्ञान, दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य।

४५९ औदयिक भाव कितने हैं?

४५९ इक्कीस हैं—गति ४ कषाय ४ लिंग ३ मिथ्यादर्शन १ अज्ञान १ असंयम १ असिद्धत्व १ लेश्या ६ (पीत, पद्म, शुक्ल, कृष्ण, नील, कापोत)।

४६० पारिणामिक भाव कितने हैं?

४६० तीन हैं—जीवत्व, भव्यत्व, अभव्यत्व।

४६१ लेश्या किसको कहते हैं?

४६१ कषायके उदयकरके अनुरंजित योगोंकी प्रवृत्तिको भावलेश्या कहते हैं और शरीरके पीतपद्मादि वर्णोंको द्रव्यलेश्या कहते हैं।

४६२ उपयोग किसको कहते हैं?

४६२ जीवके लक्षणरूप चैतन्यानुविधायी परिणामको उपयोग कहते हैं।

४६३ उपयोगके कितने भेद हैं?

४६३ दो हैं—एक दर्शनोपयोग दूसरा ज्ञानोपयोग।

४६४ दर्शनोपयोगके कितने भेद हैं?

४६४ चार हैं—चक्षुर्दर्शन, अचक्षुर्दर्शन, अवधिदर्शन और केवलदर्शन।

४६५ ज्ञानोपयोगके कितने भेद हैं?

४६५ आठ हैं—मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्ययज्ञान, केवलज्ञान, कुमतिज्ञान, कुश्रुतज्ञान और कुअवधिज्ञान।

४६६ संज्ञा किसको कहते हैं?

४६६ अभिलाषाको (वांछाको) संज्ञा कहते हैं?

४६७ संज्ञाके कितने भेद हैं?

४६७ चार हैं—आहार, भय, मैथुन और परिग्रह।

४६८ मार्गणा किसको कहते हैं?

४६८ जिन २ धर्मविशेषोंसे जीवोंका अन्वेषण

(खोज) किया जाय उन धर्मविशेषोंको मार्गणा कहते हैं।

४६९ मार्गणाके कितने भेद हैं?

४६९ चौदह हैं—गति, इन्द्रिय, काय, योग, वेद, कषाय, ज्ञान, संयम, दर्शन, लेश्या, भव्यत्व, सम्यक्त्व, संज्ञित्व, आहार।

४७० गति किसको कहते हैं?

४७० गतिनामा नामकर्मके उदयसे जीवकी पर्यायविशेषको गति कहते हैं।

४७१ गतिके कितने भेद हैं?

४७१ चार हैं—नरकगति, तिर्यंचगति, मनुष्यगति, देवगति।

४७२ इन्द्रिय किसको कहते हैं?

४७२ आत्माके लिङ्गको (चिह्नको) इन्द्रिय कहते हैं।

४७३ इन्द्रियके कितने भेद हैं?

४७३ दो हैं—द्रव्येन्द्रिय और भावेन्द्रिय।

४७४ द्रव्येन्द्रिय किसको कहते हैं ?

४७४ निर्वृत्ति और उपकरणको द्रव्येन्द्रिय कहते हैं।

४७५ निर्वृत्ति किसको कहते हैं ?

४७५ प्रदेशोंकी रचनाविशेषको निर्वृत्ति कहते हैं।

४७६ निर्वृत्तिके कितने भेद हैं ?

४७६ दो हैं–बाह्य और आभ्यन्तर।

४७७ बाह्यनिर्वृत्ति किसको कहते हैं ?

४७७ इन्द्रियोंके आकाररूप पुद्गलकी रचनाविशेषको बाह्यनिर्वृत्ति कहते हैं।

४७८ आभ्यन्तर निर्वृत्ति किसको कहते हैं ?

४७८ आत्माके विशुद्धप्रदेशोंकी इन्द्रियाकार रचनाविशेषको आभ्यन्तर निर्वृत्ति कहते हैं।

४७९ उपकरण किसको कहते हैं ?

४७९ जो निर्वृत्तिका उपकार (रक्षा) करै, उसको उपकरण कहते हैं।

४८० उपकरणके कितने भेद हैं ?

४८० दो हैं—आभ्यन्तर और बाह्य।

४८१ आभ्यन्तर उपकरण किसको कहते हैं?

४८१ नेत्रइन्द्रियमें कृष्ण शुक्ल मंडलकी तरह सब इंद्रियोंमें जो निर्वृत्तिका उपकार करै उसको आभ्यन्तर उपकरण कहते हैं।

४८२ बाह्योपकरण किसको कहते हैं?

४८२ नेत्रेन्द्रियमें पलक वगैरहकी तरह जो निर्वृत्तिका उपकार करै उसको बाह्योपकरण कहते हैं।

४८३ भावेन्द्रिय किसको कहते हैं?

४८३ लब्धि और उपयोगको भावेन्द्रिय कहते हैं।

४८४ लब्धि किसको कहते हैं?

४८४ ज्ञानावरण कर्मके क्षयोपशमको लब्धि कहते हैं।

४८५ उपयोग किसको कहते हैं?

४८५ क्षयोपशमहेतुक चेतनाके परिणामविशेषको उपयोग कहते हैं।

४८६ द्रव्येन्द्रियोंके कितने भेद हैं?

४८६ पांच हैं—स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और श्रोत्र।

४८७ स्पर्शनेन्द्रिय किसको कहते हैं?

४८७ जिसके द्वारा आठ प्रकारके स्पर्शका ज्ञान हो उसको स्पर्शनेन्द्रिय कहते हैं।

४८८ रसनेन्द्रिय किसको कहते हैं?

४८८ जिसके द्वारा पांच प्रकारके रसका (स्वादका) ज्ञान हो उसको रसनेन्द्रिय कहते हैं।

४८९ घ्राणेन्द्रिय किसको कहते हैं?

४८९ जिसके द्वारा दो प्रकारकी गंधका (सुगंध दुर्गंधका) ज्ञान हो उसको घ्राणेन्द्रिय कहते हैं।

४९० चक्षुरिन्द्रिय किसको कहते हैं?

४९० जिसके द्वारा पांच प्रकारके वर्णका (रंगका) ज्ञान हो उसको चक्षुरिन्द्रिय कहते हैं।

४९१ श्रोत्रेन्द्रिय किसको कहते हैं?

४९१ जिसके द्वारा सात प्रकारके स्वरोंका ज्ञान हो उसको श्रोत्रेन्द्रिय कहते हैं।

४९२ किन २ जीवोंके कौन २ सी इन्द्रियां होती हैं?

४९२ पृथिवी, अप, तेज, वायु और वनस्पति इन जीवोंके एक स्पर्शन इन्द्रिय ही होती है। कृमिआदि जीवोंके स्पर्शन और रसना दो इन्द्रियां होती हैं। पिपीलिका (चिंवटी) वगैरह जीवोंके स्पर्शन, रसना और घ्राण ये तीन इन्द्रियां होती हैं। भ्रमर मक्षिका वगैरहके श्रोत्रके विना चार इन्द्रियां होतीं हैं। घोड़े आदि पशु, मनुष्य, देव और नारकी जीवोंके पांचों इन्द्रियां होती हैं।

४९३ काय किसको कहते हैं?

४९३ त्रस स्थावर नामकर्मके उदयसे आत्माके प्रदेशप्रचयको काय कहते हैं।

४९४ त्रस किसको कहते हैं?

४९४ त्रसनामा नामकर्मके उदयसे द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, और पंचेन्द्रियोंमें जन्म लेनेवाले जीवोंको त्रस कहते हैं।

४९५ स्थावर किसको कहते हैं?

४९५ स्थावरनामा नामकर्मके उदयसे पृथिवी, अप, तेज वायु और वनस्पतिमें, जन्म लेनेवाले जीवोंको स्थावर कहते हैं।

४९६ वादर किसको कहते हैं?

४९६ पृथिवीआदिकसे जो रुक जाय वा दूसरोंको रोकै उसको वादर कहते हैं।

४९७ सूक्ष्म किसको कहते हैं?

४९७ जो पृथिवीआदिकसे स्वयं न रुकै और न दूसरे पदार्थोंको रोकै उसको सूक्ष्म कहते हैं।

४९८ वनस्पतिके कितने भेद हैं?

४९८ दो हैं—प्रत्येक और साधारण।

४९९ प्रत्येक वनस्पति किसको कहते हैं?

४९९ एक शरीरका जो एक ही स्वामी हो उसको प्रत्येक वनस्पति कहते हैं।

५०० साधारण वनस्पति किसको कहते हैं?

५०० जिन जीवोंके आहार, श्वासोच्छ्वास, आयु

और काय ये साधारण (समान अथवा एक) हों उनको साधारण कहते हैं—जैसे—कंदमूलादिक।

५०१ प्रत्येक वनस्पतिके कितने भेद हैं?

५०१ दो हैं—सप्रतिष्ठित प्रत्येक और अप्रतिष्ठित प्रत्येक।

५०२ सप्रतिष्ठित प्रत्येक किसको कहते हैं?

५०२ जिस प्रत्येक वनस्पतिके आश्रय अनेक साधारण वनस्पति शरीर हों उसको सप्रतिष्ठित प्रत्येक कहते हैं।

५०३ अप्रतिष्ठित प्रत्येक किसको कहते हैं?

५०३ जिस प्रत्येक वनस्पतिके आश्रय कोई भी साधारण वनस्पति न हो उसको अप्रतिष्ठित प्रत्येक कहते हैं।

५०४ साधारण वनस्पति सप्रष्ठितप्रत्येक वनस्पतिमें ही होते हैं या और कहीं भी होते हैं?

५०४ पृथिवी, अप, तेज, वायु, केवली भगवान, आहारक शरीर, देव, नारकी, इन आठके सिवाय सब

संसारी जीवोंके शरीर साधारण अर्थात् निगोदके आश्रय हैं।

५०५ साधारण वनस्पतिके (निगोदके) कितने भेद हैं?

५०५ दो भेद हैं—एक नित्यनिगोद और एक इतरनिगोद।

५०६ नित्यनिगोद किसको कहते हैं?

५०६ जिसने कभी भी निगोदके सिवाय दूसरी पर्याय नहीं पायी अथवा जिसने कभी भी निगोदके सिवाय दूसरी पर्याय न तो पाई और न पावैगा उसको नित्यनिगोद कहते हैं।

५०७ इतरनिगोद किसको कहते हैं?

५०७ जो निगोदसे निकलकर दूसरी पर्याय पाकर फिर निगोदमें उत्पन्न हो उसको इतरनिगोद कहते हैं।

५०८ वादर और सूक्ष्म कौन २ से जीव हैं?

५०८ पृथिवी, अप्, तेजः, वायु, नित्यनिगोद

और इतरनिगोद ये ६ बादर और सूक्ष्म दोनों प्रकारके होते हैं। बाक़ीके सब जीव बादर ही होते हैं सूक्ष्म नहीं होते हैं।

५०९ योग किसको कहते हैं?

५०९ पुद्गलविपाकी शरीर और अंगोपांगनामा नामकर्मके उदयसे मनोवर्गणा वचनवर्गणा तथा कायवर्गणाके अवलंबनसे कर्म नोकर्मको ग्रहण करनेकी जीवकी शक्तिविशेषको भावयोग कहते हैं। इस ही भावयोगके निमित्तसे आत्मप्रदेशके परिस्पंदको (चंचल होनेको) द्रव्ययोग कहते हैं।

५१० योगके कितने भेद हैं?

५१० पंद्रह हैं—मनोयोग ४, वचनयोग ४, और काययोग ७।

५११ वेद किसको कहते हैं?

५११ नोकषायके उदयसे उत्पन्न हुई जीवके मैथुन करनेकी अभिलाषाको भाववेद कहते हैं और नामकर्मके

उदयसे आविर्भूत जीवके चिह्नविशेषको द्रव्यवेद कहते हैं।

५१२ वेदके कितने भेद हैं?

५१२ तीन हैं—स्त्रीवेद, पुरुषवेद, नपुंसकवेद।

५१३ कषाय किसको कहते हैं?

५१३ जो आत्माके सम्यक्त्व, देशचारित्र, सकलचारित्र और यथाख्यातचारित्ररूप परिणामोंको घातै उसको कषाय कहते हैं।

५१४ कषायके कितने भेद हैं?

५१४ सोलह भेद हैं—अनन्तानुबन्धी ४, अप्रत्याख्यानावरणीय, ४ प्रत्याख्यानावरणीय, ४ और संज्वलन ४।

५१५ ज्ञानमार्गणाके कितने भेद हैं?

५१५ मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्यय, केवल तथा कुमति, कुश्रुत, कुअवधि।

५१६ संयम किसको कहते हैं?

५१६ अहिंसादिक पांच व्रत धारणकरने, ईर्यापथ

आदि पांच समितियोंको पालने, क्रोधादि कषायोंके निग्रह करने, मनोयोगादिक तीनों योगोंको रोकने, स्पर्शन आदि पांचइन्द्रियोंके विजयकरनेको संयम कहते हैं।

५१७ संयममार्गणाके कितने भेद हैं?

५१७ सात हैं—सामायिक, छेदोपस्थापना, परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसाम्पराय, यथाख्यात, संयमासंयम और असंयम।

५१८ दर्शनमार्गणाके कितने भेद हैं?

५१८ चार हैं—चक्षुर्दर्शन, अचक्षुर्दर्शन, अवधिदर्शन, केवलदर्शन।

५१९ लेश्यामार्गणाके कितने भेद हैं?

५१९ छह भेद हैं—कृष्ण, नील, कापोत, पीत, पद्म, शुक्ल।

५२० भव्यमार्गणाके कितने भेद हैं?

५२० दो हैं—भव्य और अभव्य।

५२१ सम्यक्त्व किसको कहते हैं?

५२१ तत्त्वार्थश्रद्धानको सम्यक्त्व कहते हैं।

५२२ सम्यक्त्वमार्गणाके कितने भेद हैं ?

५२२ छह भेद हैं—उपशमसम्यक्त्व, क्षयोपशम-सम्यक्त्व, क्षायिकसम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, सासादन और मिथ्यात्व।

५२३ संज्ञी किसको कहते हैं ?

५२३ जिसमें संज्ञा हो उसको संज्ञी कहते हैं।

५२४ संज्ञा किसको कहते हैं ?

५२४ द्रव्यमनके द्वारा शिक्षादि ग्रहण करनेको संज्ञा कहते हैं।

५२५ संज्ञीमार्गणाके कितने भेद हैं ?

५२५ दो हैं—संज्ञी और असंज्ञी।

५२६ आहार किसको कहते हैं ?

५२६ औदारिक आदिक शरीर और पर्याप्तिके योग्य पुद्गलोंके ग्रहण करनेको आहार कहते हैं।

५२७ आहारमार्गणाके कितने भेद हैं ?

५२७ दो हैं—आहारक और अनाहारक।

५२८ अनाहारक जीव किस २ अवस्थामें होता है?

५२८ विग्रह, गति, और किसी २ समुद्घातमें और अयोगकेवली अवस्थामें जीव अनाहारक होता है।

५२९ विग्रहगति किसको कहते हैं?

५२९ एक शरीरको छोड़कर दूसरे शरीरके प्रति गमन करनेको विग्रहगति कहते हैं।

५३० विग्रहगतिमें कौनसा योग होता है?

५३० कार्माण योग होता है।

५३१ विग्रहगतिके कितने भेद हैं?

५३१ चार हैं—ऋजु गति, पाणिमुक्ता गति, लांगलिका गति, गोमूत्रिका गति।

५३२ इन विग्रहगतियोंमें कितना २ काल लगता है?

५३२ ऋजु गतिमें एक समय, पाणिमुक्ता अर्थात् एक मोड़ेवाली गतिमें दो समय, लांगलिका गतिमें तीन समय, और गोमूत्रिका गतिमें चार समय लगते हैं।

५३३ इन गतियोंमें अनाहारकअवस्था कितने समय तक रहती है?

५३३ ऋजुगतिवाला जीव अनाहारक नहिं होता, पाणिमुक्ता गतिमें एक समय अनाहारक तथा लांगलिकामें दो समय और गोमूत्रिकामें तीन समय अनाहारक रहता है।

५३४ मोक्ष जानेवाले जीवके कौनसी गति होती है?

५३४ ऋजु गति होती है और वह जीव अनाहारक ही होता है।

५३५ जन्म कितने प्रकारका होता है?

५३५ तीन प्रकारका—उपपादजन्म, गर्भजन्म, और सम्मूर्च्छनजन्म।

५३६ उपपादजन्म किसको कहते हैं?

५३६ जो जीव देवोंकी उपपादशय्या तथा नारकियोंके योनिस्थानमें पहुँचते ही अंतर्मुहूर्तमें युवावस्थाको प्राप्त हो जाय उसके जन्मको उपपादजन्म कहते हैं।

५३७ गर्भजन्म किसे कहते हैं ?

५३७ मातापिताके शोणितशुक्रसे जिनका शरीर बनै उनके जन्मको गर्भजन्म कहते हैं।

५३८ सम्मूर्च्छनजन्म किसको कहते हैं ?

५३८ जो मातापिताकी अपेक्षाके विना इधर उधरके परमाणुओंको शरीररूप परिणमावै उसके जन्मको स-म्मूर्च्छन जन्म कहते हैं।

५३९ किन २ जीवोंके कौन २ सा जन्म होता है ?

५३९ देव नारकियोंके उपपाद जन्म ही होता है। जरायुज, अंडज, पोत (जो योनिसे निकलते ही भागने दौड़ने लग जायं और जिनके ऊपर जेर वगैरह नहीं होती) जीवोंके गर्भजन्म ही होता है। और शेष जीवोंके सम्मूर्च्छनजन्म ही होता है।

५४० कौन २ से जीवोंके कौन २ सा लिंग होता है ?

५४० नारकी और सम्मूर्च्छन जीवोंके नपुंसक

लिंग होता है देवोंके पुलिंग और स्त्रीलिंग और शेष जीवोंके तीनों लिंग होते हैं ।

५४१ जीवसमास किसको कहते हैं?

५४१ जीवोंके रहनेके ठिकानोंको जीवसमास कहते हैं ।

५४२ जीवसमासके कितने भेद हैं?

५४२ अट्ठानवें—तिर्यंचके ८५ और मनुष्यके ९ नारकीके दो और देवोंके दो ।

५४३ तिर्यंचके पचासी भेद कौन २ से हैं?

५४३ सम्मूर्च्छनके उनहत्तर और गर्भजके सोलह।

५४४ सम्मूर्च्छनके उनहत्तर कौन २ से हैं?

५४४ एकेन्द्रियके ४२ विकलत्रयके ९ पंचेन्द्रियके १८ ।

५४५ एकेन्द्रियके वियालीस कौन २ से हैं?

५४५ पृथिवी, अप, तेज, वायु, नित्यनिगोद, इतरनिगोद, इन छहोंके वादर और सूक्ष्मकी अपेक्षासे १२ तथा सप्रतिष्ठितप्रत्येक और अप्रतिष्ठितप्रत्येकको मिला-

नेसे १४ हुए। इन चौदहोंके पर्याप्तक, निर्वृत्यपर्याप्तक, और लब्ध्यपर्याप्तक इन तीनोंकी अपेक्षासे ४२ जीव समास होते हैं।

५४६ विकलत्रयके ९ भेद कौन २ से हैं?

५४६ द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रियके पर्याप्तक निर्वृत्यपर्याप्तक, और लब्ध्यपर्याप्तककी अपेक्षासे नौ भेद हुए।

५४७ सम्मूर्च्छन पंचेन्द्रियके अठारह भेद कौन २ से हैं?

५४७ जलचर, थलचर, नभचर, इन तीनोंके सैनी असैनीकी अपेक्षासे ६ भेद हुए और इन छहोंके पर्याप्तक, निर्वृत्त्यपर्याप्तक, लब्ध्यपर्याप्तककी अपेक्षासे १८ जीव समास होते हैं।

५४८ गर्भज पंचेन्द्रियके १६ भेद कौन २ से हैं?

५४८ कर्मभूमिके १२ और भोगभूमिके ४।

५४९ कर्मभूमिके बारह कौन २ से हैं?

५४९ जलचर, स्थलचर, नभचर, इन तीनोंके सैनी

असैनीके भेदसे छह भेद हुए और इनके पर्याप्त, निर्वृ-त्त्यपर्याप्तक, लब्ध्यपर्याप्तककी अपेक्षा १२ भेद हुए।

५५० भोगभूमिके चार कौन २ से हैं?

५५० थलचर और नभचर इनके पर्याप्तक और निर्वृत्त्यपर्याप्तककी अपेक्षा ४ भेद हुए। भोगभूमिमें अ-सैनी तिर्यंच नहिं होते।

५५१ मनुष्योंके नौ भेद कौन २ से हैं?

५५१ आर्यखंड, म्लेच्छखंड, भोगभूमि, और कु-भोगभूमि इन चारों गर्भजोंके पर्याप्तक, निर्वृत्त्यपर्याप्तककी अपेक्षा ८ हुए इनमें सम्मूर्च्छन मनुष्यका लब्ध्यपर्याप्तक भेद मिलानेसे ९ भेद होते हैं।

५५२ नारकियोंके दो भेद कौन २ से हैं?

५५२ पर्याप्तक और निर्वृत्यपर्याप्तक।

५५३ देवोंके दो भेद कौन २ से हैं?

५५३ पर्याप्तक और निर्वृत्त्यपर्याप्तक।

५५४ देवोंके विशेष भेद कौन २ से है?

५५४ चार हैं—भवनवासी, व्यन्तर, ज्योतिष्क और वैमानिक।

५५५ भवनवासी देव कितने हैं?

५५५ दश हैं—असुरकुमार, नागकुमार, विद्युत्कुमार, सुपर्णकुमार, अग्निकुमार, वातकुमार, स्तनितकुमार, उदधिकुमार, दीपकुमार, दिक्कुमार।

५५६ व्यन्तरोंके कितने भेद हैं?

५५६ आठ हैं—किन्नर, किंपुरुष, महोरग, गंधर्व, यक्ष, राक्षस, भूत, पिशाच।

५५७ ज्योतिष्क देवोंके कितने भेद हैं?

५५७ पांच भेद हैं—सूर्य, चन्द्रमा, ग्रह, नक्षत्र और तारे।

५५८ वैमानिक देवोंके कितने भेद हैं?

५५८ दो हैं—कल्पोपपन्न और कल्पातीत।

५५९ कल्पोपपन्न किनको कहते हैं?

५५९ जिनमें इन्द्रादिकोंकी कल्पना हो उनको कल्पोपपन्न कहते हैं।

५६० कल्पातीत किनको कहते हैं ?

५६० जिनमें इन्द्रादिककी कल्पना न हो उनको कल्पातीत कहते हैं ।

५६१ कल्पोपपन्न देवोंके कितने भेद हैं ?

५६१ सोलह—सौधर्म, ऐशान, सानत्कुमार, माहेन्द्र, ब्रह्म, ब्रह्मोत्तर, लांतव, कापिष्ट, शुक्र, महाशुक्र, सतार, सहस्रार, आनत, प्राणत, आरण, और अच्युत ।

५६२ कल्पातीत देवोंके कितने भेद हैं ?

५६२ तेईस हैं—नव ग्रैवेयक, नव अनुदिश, पांच पंचोत्तर (विजय, वैजयंत, जयंत, अपराजित और सर्वार्थसिद्धि)

५६३ नारकियोंके विशेष भेद कौन २ से हैं ?

५६३ पृथिवियोंकी अपेक्षासे सात भेद हैं ।

५६४ सात पृथिवियोंके नाम क्या क्या हैं ?

५६४ रत्नप्रभा (घर्मा), शर्कराप्रभा (वंशा), बालुकाप्रभा (मेघा), पंकप्रभा (अंजना), धूमप्रभा (अरिष्टा), तमप्रभा (मघवी), महातमप्रभा (माघवी) ।

५६५ सूक्ष्मएकेन्द्रियजीवोंके रहनेका स्थान क्या है?

५६५ सर्वलोक।

५६६ वादरएकेन्द्रियजीव कहां रहते हैं?

५६६ वादरएकेन्द्रिय जीव किसी आधारका निमित्त पाकर निवास करते हैं।

५६७ त्रसजीव कहां रहते हैं?

५६७ त्रसजीव त्रसनालीमें ही रहते हैं।

५६८ विकलत्रय कहां रहते हैं?

५६८ विकलत्रय जीव कर्मभूमि और अंतके आधे द्वीप तथा अंतके स्वयंभूरमण समुद्रमें ही रहते हैं।

५६९ पंचेन्द्रिय तिर्यंच कहाँ २ रहते हैं?

५६९ तिर्यक् लोकमें रहते हैं परंतु जलचर तिर्यंच लवणसमुद्र, कालोदधिसमुद्र और स्वयंभूरमण समुद्रके सिवाय अन्य समुद्रमें नहीं हैं।

५७० नारकी जीव कहां रहते हैं?

५७० अधोलोककी सात पृथिवियोंमें (नरकोंमें) रहते हैं।

५७१ भवनवासी और व्यन्तरदेव कहां रहते हैं?

५७१ पहिली पृथिवीके खरभाग और पंकभागमें तथा तिर्यक्लोकमें।

५७२ ज्योतिष्क देव कहां रहते हैं?

५७२ पृथिवीसे सातसौ नब्बे योजनकी उंचाईसे लगाकर नौसो योजनकी उंचाईतक अर्थात् एकसौ द-श योजन आकाशमें एक राजूमात्र तिर्यक्लोकमें ज्यो-तिष्क देव निवास करते हैं।

५७३ वैमानिक देव कहां रहते हैं?

५७३ ऊर्द्धलोकमें।

५७४ मनुष्य कहां रहते हैं।

५७४ नरलोकमें।

५७५ लोकके भेद कितने है?

५७५ तीन हैं—ऊर्द्धलोक, मध्यलोक और अधोलोक।

५७६ अधोलोक किसको कहते हैं?

५७६ मेरुके नीचे सात राजू अधोलोक है।

५७७ ऊर्द्धलोक किसको कहते हैं?

५७७ मेरुके ऊपर लोकके अंतपर्यन्त ऊर्द्धलोक है।

५७८ मध्यलोक किसको कहते हैं?

५७८ एक लाख चालीस योजन मेरुकी उंचाईके बराबर मध्यलोक है।

५७९ मध्यलोकका विशेष स्वरूप क्या है?

५७९ मध्यलोकके अत्यन्त वीचमें एकलाख योजन चौड़ा, गोल (थालीकी तरह) जंबूद्वीप है। जंबूद्वीपके बीचमें एकलाख योजन ऊंचा सुमेरु पर्वत है। जिसका एक हजार योजन जमीनके भीतर मूल है निन्याणवे हजार योजन पृथिवीके ऊपर है। और चालीस योजनकी

---

१ यहां एक योजन दोहजार कोशका जानना।

चूलिका (चोटी) है। जंबूद्वीपके बीचमें पश्चिम पूर्वकी तरफ लंबे छह कुलाचल पर्वत पड़े हुए हैं। जिनसे जंबूद्वीपके सात खंड होगए हैं। इन सातों खंडोंके नाम इसप्रकार हैं—भरत १, हैमवत २, हरि ३, विदेह ४, रम्यक ५, हैरण्यवत ६ और ऐरावत ७। विदेह क्षेत्रमें मेरुसे उत्तरकी तरफ उत्तरकुरु और दक्षिणकी तरफ देवकुरु है। जंबूद्वीपके चारों तरफ खाईकी तरह बेढ़े हुए दोलाख योजन चौड़ा लवणसमुद्र है। लवणसमुद्रको चारों तरफसे बेढ़े हुए चारलाख योजन चौड़ा धातकीखंड द्वीप है। इस धातकीखंड द्वीपमें दो मेरुपर्वत हैं और क्षेत्र कुलाचलादिकी सब रचना जंबूद्वीपसे दूनी है। धातकीखंडको चारों तरफ बेढ़े हुए आठ लाख योजन चौड़ा कालोदधि समुद्र है। और कालोदधिको बेढ़े हुए सोलह लाख योजन चौड़ा पुष्करद्वीप है। पुष्करद्वीपके बीचोंबीच वलयके आकार, चौड़ाई पृथिवीपर एक हजार बाईस योजन, बीचमें सातसौ तेईस योजन, ऊपर चारसौ चौबीस योजन, ऊंचा सतरहसौ

इक्कईस योजन, और जमीनके भीतर चारसौ सवातीस योजन जिसकी जड़ है ऐसा मानुषोत्तरनामा पर्वत पड़ा हुआ है, जिससे पुष्करद्वीपके दो खंड हो गये हैं। पुष्कर-द्वीपके पहिले अर्द्ध भागमें जंबूद्वीपसे दूनी २ अर्थात् धातकीखंड द्वीपके बराबर सब रचना है। जंबूद्वीप धातकीखंड द्वीप और पुष्करार्द्ध द्वीप तथा लवणोदधि स-मुद्र और कालोदधि समुद्र इतने क्षेत्रको नरलोक कहते हैं। पुष्करद्वीपसे आगे परस्पर एक दूसरेको बेढ़े हुए दूने २ विस्तारवाले मध्यलोकके अंतपर्यन्त द्वीप और समुद्र हैं। पांच मेरु सम्बंधी पांच भरत, पांच ऐरावत, देवकुरु और उत्तरकुरुको छोड़कर पांच विदेह इस प्रकार सब मिलकर १५ कर्मभूमि हैं। पांच हैम-वत और पांच हैरण्यवत इन दश क्षेत्रोंमें जघन्य भो-गभूमि हैं। पांच हरि और पांच रम्यक इन दश क्षे-त्रोंमें मध्यम भोगभूमि हैं। और पांच देवकुरु और पांच उत्तरकुरु इन दश क्षेत्रोंमें उत्तम भोगभूमि हैं। जहां-पर असि, मसि, कृषि, सेवा, शिल्प और वाणिज्य इन

षट्कर्मोंकी प्रवृत्ति हो, उसको कर्मभूमि कहते हैं। जहां इनकी प्रवृत्ति न हो उसको भोगभूमि कहते हैं। मनुष्यक्षेत्रसे बाहरके समस्त द्वीपोंमें जघन्य भोगभूमिकी-सी रचना है। किंतु अन्तिम स्वयंभूरमण द्वीपके उत्तरार्द्धमें तथा समस्त स्वयंभूरमण समुद्रमें और चारोंकोनोंकी पृथिवियोंमें कर्मभूमिकीसी रचना है। लवणसमुद्र और कालोदधिसमुद्रमें ९६ अंतर्द्वीप हैं जिनमें कुभोगभूमिकी रचना है। वहां मनुष्य ही रहते हैं। उनमें मनुष्योंकी आकृति नाना प्रकारकी कुत्सित हैं।

इति चतुर्थोऽध्यायः समाप्तः।

अथ पञ्चमोऽध्यायः प्रारभ्यते।

५८० संसारमें समस्त प्राणी सुखको चाहते हैं और सुखहीका उपाय करते हैं परंतु सुखको प्राप्त क्यों नहीं होते?

५८० संसारी जीव असली सुखका स्वरूप और उ-

सका उपाय न तो जानते हैं और न उसका साधन करते हैं इसलिये असली सुखको भी प्राप्त नहीं होते।

५८१ असली सुखका क्या स्वरूप है?

५८१ आल्हादस्वरूप जीवके अनुजीवी गुणको असली सुख कहते हैं। यही जीवका खास स्वभाव है परंतु संसारी जीवोंने भ्रमवश सातावेदनीय कर्मके उदयजनित उस असली सुखकी वैभाविक परिणतिरूप साता परिणामको ही सुख मान रक्खा है।

५८२ संसारी जीवको असली सुख क्यों नहीं मिलता है?

५८२ कर्मोंने उस सुखको घात रक्खा है इस कारण असली सुख नही मिलता।

५८३ संसारी जीवको असली सुख कब मिल सकता है?

५८३ मोक्ष होनेपर।

५८४ मोक्षका स्वरूप क्या है?

५८४ आत्मासे समस्त कर्मोंके विप्रमोक्षको (अत्यन्त वियोगको) मोक्ष कहते हैं।

५८५ उस मोक्षकी प्राप्तिका उपाय क्या है?

५८५ संवर और निर्जरा।

५८६ संवर किसको कहते हैं?

५८६ आस्रवके निरोधको संवर कहते हैं, अर्थात् अनागत (नवीन) कर्मोंका आत्माके साथ संवंध न होनेका नाम संवर है।

५८७ निर्जरा किसको कहते हैं?

५८७ आत्माका पूर्वसे वंधे हुए कर्मोंमें संवंध छूटनेको निर्जरा कहते हैं।

५८८ संवर और निर्जरा होनेका उपाय क्या है?

५८८ सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र इन तीनों पूर्ण गुणोंकी एकता ही संवर और निर्जरा होनेका उपाय है।

५८९ इन तीनों पूर्ण गुणोंकी एकता युगपत् होती है या क्रमसे ?

५८९ क्रमसे होती है।

५९० इन तीनों पूर्ण गुणोंकी एकता होनेका क्रम किस प्रकार है ?

५९० जैसे जैसे गुणस्थान बढ़ते हैं तैसे ही ये गुण भी बढ़ते हुए अंतमें पूर्ण होते हैं।

५९१ गुणस्थान किसको कहते हैं ?

५९१ मोह और योगके निमित्तसे सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्ररूप आत्माके गुणोंकी तारतम्यरूप अवस्थाविशेषको गुणस्थान कहते हैं।

५९२ गुणस्थानके कितने भेद हैं ?

५९२ चौदह हैं—मिथ्यात्व १ सासादन २ मिश्र ३ अविरतसम्यग्दृष्टि ४ देशविरत ५ प्रमत्तविरत ६ अप्रमत्तविरत ७ अपूर्वकरण ८ अनिवृत्तिकरण ९ सूक्ष्मसाम्पराय १० उपशान्तमोह ११ क्षीणमोह १२ सयोगकेवली १३ अयोगकेवली १४।

५९३ गुणस्थानोंके ये नाम होनेका कारण क्या है?

५९३ मोहनीय कर्म और योग।

५९४ कौन २ से गुणस्थानका क्या क्या निमित्त है?

५९४ आदिके चार गुणस्थान तो दर्शनमोहनीय कर्मके निमित्तसे हैं। पांचवें गुणस्थानसे लगाकर बारहवें गुणस्थान पर्यन्त आठ गुणस्थान चारित्रमोहनीयके निमित्तसे हैं। और तेरहवां और चौदहवां ये दो गुणस्थान योगोंके निमित्तसे होते हैं। भावार्थ—पहिला गुणस्थान दर्शनमोहनीयके उदयसे होता है। इसमें आत्माके परिणाम मिथ्यात्वरूप होते हैं। चौथा गुणस्थान दर्शनमोहनीय कर्मके उपशम, क्षय, अथवा क्षयोपशमसे होता है। इस गुणस्थानमें आत्माके सम्यग्दर्शन गुणका प्रादुर्भाव हो जाता है। तीसरा गुणस्थान सम्यग्मिथ्यात्वरूप दर्शनमोहनीय कर्मके उदयसे होता है। इस गुणस्थानमें आत्माके परिणाम सम्यग्मिथ्यात्व अ-

र्थात् उभयरूप होते हैं । पहिले गुणस्थानमें औदयिक भाव चौथे गुणस्थानमें औपशमिक, क्षायिक अथवा क्षायोपशमिक भाव और तीसरे गुणस्थानमें औदयिक भाव होते हैं। परंतु दूसरा गुणस्थान दर्शनमोहनीय कर्मकी उदय, उपशम, क्षय, और क्षयोपशम इन चार अवस्थाओंमेंसे किसी भी अवस्थाकी अपेक्षा नही रखता है इसलिये यहांपर दर्शनमोहनीय कर्मकी अपेक्षासे पारिणामिक भाव हैं किन्तु अनंतानुबंधीरूप चारित्रमोहनीय कर्मका उदय होनेसे इस गुणस्थानमें चारित्रमोहनीय कर्मकी अपेक्षासें औदयिक भाव भी कहे जासकते हैं। इस गुणस्थानमें अनंतानुबंधीके उदयसे सम्यक्त्वका घात हो गया है इसलिये यहां सम्यक्त्व नहीं है और मिथ्यात्वका भी उदय नही आया है इसलिये मिथ्यात्व परिणाम भी नहीं हैं। अत एव यह गुणस्थान मिथ्यात्व और सम्यक्त्वकी अपेक्षासे अनुभयरूप है। पांचवें गुणस्थानसे दशवें गुणस्थानतक छह गुणस्थान चारित्रमोहनीय कर्मके क्षयोपशमसे होते हैं इसलिये

इन गुणस्थानोंमें क्षायोपशमिक भाव होते हैं। इन गुणस्थानोंमें सम्यक्चारित्र गुणकी क्रमसे वृद्धि होती जाती है। ग्यारहवां गुणस्थान चारित्रमोहनीय कर्मके उपशमसे होता है इसलिये ग्यारहवे गुणस्थानमें औपशमिक भाव होते हैं। यद्यपि यहांपर चारित्रमोहनीय कर्मका पूर्णतया उपशम हो गया है तथापि योगका सद्भाव होनेसे पूर्णचारित्र नहीं है—क्योंकि सम्यक्चारित्रके लक्षणमें योग और कषायके अभावसे सम्यक्चारित्र होता है ऐसा लिखा है। बारहवां गुणस्थान चारित्रमोहनीय कर्मके क्षयसे होता है इसलिये यहां क्षायिक भाव होते हैं। इस गुणस्थानमें भी ग्यारहवें गुणस्थानकी तरह सम्यक्चारित्रकी पूर्णता नहीं है—सम्यग्ज्ञानगुण यद्यपि चौथे गुणस्थानमें ही प्रगट हो चुका था। भावार्थ—यद्यपि आत्माका ज्ञानगुण अनादिकालसे प्रवाहरूप चला आ रहा है तथापि दर्शनमोहनीयका उदय होनेसे वह ज्ञान मिथ्यारूप था परन्तु चौथे गुणस्थानमें जब दर्शनमोहनीय कर्मके उदयका अभाव हो गया तब वही

आत्माका ज्ञानगुण सम्यग्ज्ञान कहलाने लगा। और पंचमादि गुणस्थानोंमें तपश्चरणादिके निमित्तसे अवधि मनःपर्यय ज्ञान भी किसी २ जीवके प्रगट हो जाते हैं तथापि केवलज्ञानके हुए विना सम्यग्ज्ञानकी पूर्णता नहीं हो सकती इसलिये इस बारहवें गुणस्थानतक यद्यपि सम्यग्दर्शनकी पूर्णता होगई है (क्योंकि क्षायिक सम्यक्त्वके विना क्षपकश्रेणी नहिं चढ़ता और क्षपकश्रेणीके विना १२ वाँ गुणस्थान नहिं होता) तथापि सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र गुण अभीतक अपूर्ण हैं इसीलिये अभीतक मोक्ष नही होती। तेरहवां गुणस्थान योगोंके सद्भावकी अपेक्षासे होता है इसीलिये इसका नाम सयोग और केवलज्ञानके निमित्तसे सयोगकेवली है। इस गुणस्थानमें सम्यग्ज्ञानकी पूर्णता हो जाती है परंतु चारित्र गुणकी पूर्णता न होनेसे मोक्ष नही होती। चौदहवां गुणस्थान योगोंके अभावकी अपेक्षा है इसलिये इसका नाम अयोगकेवली है। इस गुणस्थानमें सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र इन ती-

नों गुणोंकी पूर्णता हो जाती है अत एव मोक्ष भी अब दूर नही रही। अर्थात् अ इ उ ऋ ऌ इन पांच ह्रस्व स्वरोंके उच्चारण करनेमें जितना काल लगता है उतने ही कालमें मोक्ष हो जाती है।

५९५ मिथ्यात्वगुणस्थानका क्या स्वरूप है?

५९५ मिथ्यात्वप्रकृतिके उदयसे अतत्त्वार्थश्रद्धान-रूप आत्माके परिणामविशेषको मिथ्यात्वगुणस्थान कहते हैं। इस मिथ्यात्व गुणस्थानमें रहनेवाला जीव विपरीत श्रद्धान करता है और सच्चे धर्मकी तरफ इसकी रुचि नही होती। जैसे पित्तज्वरवाले रोगीको दुग्धादिक रस कडुवे लगते हैं उसी प्रकार इसको भी समीचीन धर्म अच्छा नही लगता।

५९६ मिथ्यात्वगुणस्थानमें किन २ प्रकृति-योंका बंध होता है?

५९६ कर्मकी १४८ प्रकृतियोंमेंसे स्पर्शादिक २० प्रकृतियोंका अभेद विवक्षासे स्पर्शादिक चारमें

और वंधन ५ और संघात ५ का अभेद विवक्षासे पांच शरीरोंमें अन्तर्भाव होता है। इस कारण भेदविवक्षासे सर्व १४८ और अभेदविवक्षासे १२२ प्रकृति हैं। सम्यग्मिथ्यात्व और सम्यक्प्रकृति इन दो प्रकृतियोंका वन्ध नहीं होता है। क्योंकि इन दोनों प्रकृतियोंकी सत्ता सम्यक्त्वपरिणामोंसे मिथ्यात्वप्रकृतिके तीन खंड करनेसे होती है इस कारण अनादि मिथ्यादृष्टि जीवकी बन्धयोग्य प्रकृति १२० और सत्त्वयोग्य प्रकृति १४६ हैं। मिथ्यात्व गुणस्थानमें तीर्थंकरप्रकृति, आहारकशरीर और आहारकआंगोपांग इन तीन प्रकृतियोंका वंध नही होता है। क्योंकि इन तीन प्रकृतियोंका बंध सम्यग्दृष्टियोंके ही होता है इसलिये इस गुणस्थानमें एकसौ वीसमेंसे तीन घटानेपर ११७ प्रकृतियोंका वंध होता है।

५९७ मिथ्यात्व गुणस्थानमें उदय कितनी प्रकृतियोंका होता है।

५९७ सम्यक्प्रकृति, सम्यग्मिथ्यात्व, आहारकशरीर, आहारकआंगोपांग और तीर्थंकरप्रकृति इन पांच प्रकृतियोंका इस गुणस्थानमें उदय नही होता इसलिये १२२ मेंसे पांच घटानेपर ११७ का उदय होता है।

५९८ मिथ्यात्वगुणस्थानमें सत्त्व (सत्ता) कितनी प्रकृतियोंका रहता है?

५९८ एकसौ अड़तालीस प्रकृतियोंका।

५९९ सासादनगुणस्थान किसको कहते हैं?

५९९ प्रथमोपशमसम्यक्त्वके कालमें जब ज्यादासे ज्यादा ६ आवली और कमतीसे कमती १ समय वाकी रहै उस समय किसी एक अनंतानुबंधी कषायके उदयसे नाश हो गया है सम्यक्त्व जिसके ऐसा जीव सासादनगुणस्थानवाला होता है।

६०० प्रथमोपशमसम्यक्त्व किसको कहते हैं?

६०० सम्यक्त्वके तीन भेद हैं—दर्शनमोहनीयकी तीन प्रकृति और अनन्तानुबंधीकी ४ प्रकृति इसप्रकार इन सात प्रकृतियोंके उपशम होनेसे जो

उत्पन्न हो उसको उपशमसम्यक्त्व कहते हैं और इन सातोंके क्षय होनेसे जो उत्पन्न हो उसको क्षायिकसम्यक्त्व कहते हैं और ६ प्रकृतियोंके अनुदय और सम्यक्प्रकृति नामक मिथ्यात्वके उदयसे जो हो, उसको क्षायोपशमिकसम्यक्त्व कहते हैं। उपशमसम्यक्त्वके दो भेद हैं—एक प्रथमोपशमसम्यक्त्व और दूसरा द्वितीयोपशमसम्यक्त्व। अनादिमिथ्यादृष्टिके पांच और सादि मिथ्यादृष्टिके सात प्रकृतियोंके उपशमसे हो, उसको प्रथमोपशमसम्यक्त्व कहते हैं।

६०१ द्वितीयोपशमसम्यक्त्व किसको कहते हैं?

६०१ सातवें गुणस्थानमें क्षायोपशमिक सम्यग्दृष्टि जीव श्रेणी चढ़नेके सम्मुख अवस्थामें अनंतानुबंधीचतुष्टयका विसंयोजन (अप्रत्याख्यानादिरूप) करके दर्शनमोहनीयकी तीनों प्रकृतियोंका उपशम करके जो सम्यक्त्व प्राप्त करता है उसको द्वितीयोपशमसम्यक्त्व कहते हैं।

६०२ आवली किसको कहते हैं?

६०२ असंख्यात समयकी एक आवली होती है।

६०३ सासादनगुणस्थानमें कितनी प्रकृतियोंका बंध होता है?

६०३ पहिले गुणस्थानमें जो ११७ प्रकृतियोंका बंध होता है उनमेंसे मिथ्यात्वगुणस्थानमें जिनकी व्युच्छित्ति है ऐसी सोलह प्रकृतियोंके घटानेपर १०१ प्रकृतियोंका बंध सासादनमें होता है। वे सोलह प्रकृति ये हैं—मिथ्यात्व, हुंडकसंस्थान, नपुंसकवेद, नरकगति, नरकगत्यानुपूर्वी, नरकायु, असंप्राप्तासृपाटिकासंहनन, एकेन्द्रिय जाति, विकलत्रय तीन, स्थावर, आताप, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण।

६०४ व्युच्छित्ति किसको कहते हैं?

६०४ जिस गुणस्थानमें कर्मप्रकृतियोंके बंध, उदय अथवा सत्त्वकी व्युच्छित्ति कही हो उस गुणस्थानतक ही उन प्रकृतियोंका बंध, उदय अथवा सत्त्व पाया जाता है। आगेके किसी भी गुणस्थानमें उन प्रकृति-

योंका बंध, उदय अथवा सत्त्व नही होता है। इसीको व्युच्छित्ति कहते हैं।

६०५ सासादनगुणस्थानमें उदय कितनी प्रकृतियोंका होता है?

६०५ पहिले गुणस्थानमें जो ११७ प्रकृतियोंका उदय होता है उनमेंसे मिथ्यात्व, आतप, सूक्ष्म, अपर्याप्त और साधारण इन पांच मिथ्यात्वगुणस्थानकी व्युच्छिन्न प्रकृतियोंको घटानेपर ११२ रहीं। परन्तु नरकगत्यानुपूर्वीका इस गुणस्थानमें उदय नही होता इसलिये इस गुणस्थानमें १११ प्रकृतियोंका उदय होता है।

६०६ सासादन गुणस्थानमें सत्त्व कितनी प्रकृतियोंका रहता है?

६०६ एकसौ पैंतालीस प्रकृतियोंका सत्त्व रहता है। यहांपर तीर्थंकर प्रकृति, आहारकशरीर और आहारक अंगोपांग इन तीन प्रकृतियोंकी सत्ता नही रहती।

६०७ तीसरा मिश्र गुणस्थान किसको कहते हैं?

६०७ सम्यग्मिथ्यात्व प्रकृतिके उदयसे जीवके न तो केवल सम्यक्त्व परिणाम होते और न केवल मिथ्यात्वरूप परिणाम होते किंतु मिले हुए दहीगुड़के स्वादकी तरह एक भिन्न जातिके मिश्र परिणाम होते हैं। इसीको मिश्र गुणस्थान कहते हैं।

६०८ मिश्र गुणस्थानमें कितनी प्रकृतियोंका बंध होता है?

६०८ दूसरे गुणस्थानमें बंधप्रकृति १०१ थीं। उनमेंसे व्युच्छिन्नप्रकृति पच्चीसको (अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया, लोभ, स्त्यानगृद्धि, निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, दुर्भग, दुःस्वर, अनादेय, न्यग्रोधसंस्थान, स्वातिसंस्थान, कुब्जकसंस्थान, वामनसंस्थान, वज्रनाराचसंहनन, नाराचसंहनन, अर्द्धनाराचसंहनन, कीलितसं., हनन, अप्रशस्तविहायोगति, स्त्रीवेद, नीचगोत्र, तिर्यग्गति, तिर्यग्गत्यानुपूर्वी, तिर्यगायुः उद्योतको) घटानेपर शेष रहीं ७६। परंतु इस गुणस्थानमें किसी भी आयुकर्मका बंध नही होता है, इसलिये छिहत्तरमेंसे मनुष्यायु, और

देवायु इन दोके घटानेपर ७४ प्रकृतियोंका बंध होता है। नरकायुकी तो पहिले गुणस्थानमें और तिर्यगायुकी दूसरे गुणस्थानमें ही व्युच्छित्ति हो चुकी है।

६०९ मिश्र गुणस्थानमें कितनी प्रकृतियोंका उदय होता है?

६०९ दूसरे गुणस्थानमें १११ प्रकृतियोंका उदय होता है उनमेंसे व्युच्छिन्न प्रकृति ९ के (अनंतानुबंधी ४ एकेन्द्रियादिक ४ स्थावर १ के) घटानेपर शेष रहीं १०२ मेंसे नरकगत्यानुपूर्वीके विना (क्योंकि यह दूसरे गुणस्थानमें घटाई जा चुकी है) शेषकी तीन आनुपूर्वी घटानेपर (क्योंकि तीसरे गुणस्थानमें मरण न होनेसे किसी भी आनुपूर्वीका उदय नहीं है) शेष रहीं ९९ प्रकृति और एक सम्यग्मिथ्यात्वप्रकृतिका उदय यहां आ मिला, इस कारण इस गुणस्थानमें १०० प्रकृतियोंका उदय होता है।

६१० मिश्रगुणस्थानमें कितनी प्रकृतियोंका सत्त्व रहता है?

६१० तीर्थंकर प्रकृतिके विना १४० प्रकृतियोंका सत्त्व रहता है ।

६११ चौथे अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानका क्या स्वरूप है ?

६११ दर्शनमोहनीयकी तीन और अनंतानुबंधीकी चार इन सात प्रकृतियोंके उपशम अथवा क्षय अथवा क्षयोपशमसे और अप्रत्याख्यानावरण क्रोध मान माया लोभके उदयसे व्रतरहित सम्यक्त्वधारी चौथे गुणस्थानवर्त्ती होता है ।

६१२ इस चौथे गुणस्थानमें बंध कितनी प्रकृतियोंका होता है ?

६१२ तीसरे गुणस्थानमें ७४ प्रकृतियोंका बंध होता है जिनमें मनुष्यायु, देवायु, और तीर्थंकर प्रकृति इन तीन सहित ७७ प्रकृतियोंका बंध यहां होता है ।

६१३ चौथे गुणस्थानमें उदय कितनी प्रकृतियोंका होता है ?

६१३ तीसरे गुणस्थानमें १०० प्रकृतियोंका उदय होता है उनमेंसे व्युच्छिन्न प्रकृति सम्यग्मिथ्यात्वके घटानेपर रही ९९, इनमें चार आनुपूर्वी और एक सम्यक्प्रकृति मिथ्यात्व इन पांच प्रकृतियोंको मिलानेपर १०४ प्रकृतियोंका उदय होता है।

६१४ चौथे गुणस्थानमें सत्त्व कितनी प्रकृतियोंका रहता है?

६१४ सबका। अर्थात् १४८ प्रकृतियोंका। किंतु क्षायिकसम्यग्दृष्टिके १४१ का ही सत्त्व है।

६१५ देशविरतनामक पांचवें गुणस्थानका क्या स्वरूप है?

६१५ प्रत्याख्यानावरण क्रोध मान माया लोभके उदयसे यद्यपि संयमभाव नहीं होता तथापि अप्रत्याख्यानावरण क्रोध मान माया लोभके उपशमसे श्रावकव्रतरूप देशचारित्र होता है। इसहीको देशविरतनामक पांचवां गुणस्थान कहते हैं। पांचवेंआदि ऊपरके समस्त गुणस्थानोंमें सम्यग्दर्शन और सम्यग्दर्शनका अ-

विनाभावी सम्यग्ज्ञान अवश्य होता है। इनके विना पांचवें छट्ठे आदि गुणस्थान नहीं होते।

६१६ पांचवें गुणस्थानमें कितनी प्रकृतियोंका बंध होता है?

६१६ चौथे गुणस्थानमें जो ७७ प्रकृतियोंका बंध कहा है उनमेंसे व्युच्छिन्न दशके (अप्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया, लोभ, मनुष्यगति, मनुष्यगत्यानुपूर्वी, मनुष्यायु, औदारिक शरीर, औदारिक अंगोपांग, वज्रऋषभनाराचसंहननके) घटानेपर शेष रही ६७ प्रकृतियोंका बंध होता है।

६१७ पांचवें गुणस्थानमें उदय कितनी प्रकृतियोंका होता है?

६१७ चौथे गुणस्थानमें जो १०४ प्रकृतियोंका उदय कहा है उनमेंसे व्युच्छिन्नप्रकृति सत्तरहके (अप्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया, लोभ, देवगति, देवगत्यानुपूर्वी, देवायु, नरकगति, नरकगत्यानुपूर्वी,

नरकायु, वैक्रियिक शरीर, वैक्रियिक अंगोपांग, मनुष्य-गत्यानुपूर्वी, तिर्यग्गत्यानुपूर्वी, दुर्भग, अनादेय, अयशस्कीर्तिके) घटानेपर शेष रहीं ८७ प्रकृतियोंका उदय है।

६१८ पांचवें गुणस्थानमें सत्त्व कितनी प्रकृतियोंका रहता है?

६१८ चौथे गुणस्थानमें जो १४८ का सत्त्व रहना कहा है उनमेंसे व्युच्छिन्नप्रकृति एक नरकायुके विना १४७ का सत्व रहता है। किंतु क्षायिकसम्यग्दृष्टिकी अपेक्षासे १४० का ही सत्त्व रहता है।

६१९ छट्ठे प्रमत्तविरतनामक गुणस्थानका स्वरूप क्या है?

६१९ संज्वलन और नोकषायके तीव्र उदयसे संयमभाव तथा मलजनक प्रमाद ये दोनों ही युगपत् होते हैं (यद्यपि संज्वलन और नोकषायका उदय चारित्रगुणका विरोधी है तथापि प्रत्याख्यानावरण कषायका उपशम होनेसे प्रादुर्भूत सकलसंयमके घातनेमें स-

मर्थ नहीं है इस कारण उपचारसे संयमका उत्पादक कहा है) इसलिये इस गुणस्थानवर्त्ती मुनिको प्रमत्तविरत अर्थात् चित्रलाचरणी कहते हैं।

६२० छट्ठे गुणस्थानमें बंध कितनी प्रकृतियोंका होता है?

६२० पांचवें गुणस्थानमें जो ६७ प्रकृतियोंका बंध होता है उनमेंसे प्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया, लोभ इन ४ व्युच्छिन्न प्रकृतियोंके घटानेपर शेष रहीं ६३ प्रकृतियोंका बंध होता है।

६२१ छट्ठे गुणस्थानमें उदय कितनी प्रकृतियोंका होता है?

६२१ पांचवें गुणस्थानमें ८७ प्रकृतियोंका उदय कहा है उनमेंसे व्युच्छिन्न प्रकृति आठके (प्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया, लोभ, तिर्यग्गति, तियगायु, उद्योत और नीचगोत्रके) घटानेपर शेष रहीं ७९ प्रकृतियोंमें आहारक शरीर और आहारक अंगोपांग ये दो प्रकृति मिलानेसे ८१ प्रकृतियोंका उदय होता है।

६२२ छट्ठे गुणस्थानमें सत्त्व कितनी प्रकृतियोंका है ?

६२२ पांचवें गुणस्थानमें १४७ प्रकृतियोंकी सत्ता कही है उनमेंसे व्युच्छिन्न प्रकृति एक तिर्यगायुके घटानेपर १४६ प्रकृतियोंका सत्त्व रहता है। किंतु क्षायिकसम्यग्दृष्टिके १३९ का ही सत्त्व है।

६२३ अप्रमत्तविरतनामके सातवें गुणस्थानका स्वरूप क्या है ?

६२३ संज्वलन और नोकषायके मंद उदय होनेसे प्रमादरहित संयमभाव होते हैं इस कारण इस गुणस्थानवर्त्ती मुनिको अप्रमत्तविरत कहते हैं।

६२४ अप्रमत्तगुणस्थानके कितने भेद हैं ?

६२४ दो हैं—स्वस्थान अप्रमत्तविरत और सातिशय अप्रमत्तविरत।

६२५ स्वस्थान अप्रमत्तविरत किसे कहते हैं?

६२५ जो हजारों वार छट्ठेसे सातवेंमें और सात-

वैसे छट्ठे गुणस्थानमें आवे जाय, उसको स्वस्थान अप्रमत्त कहते हैं।

६२६ सातिशय अप्रमत्तविरत किसको कहते हैं?

६२६ जो श्रेणी चढ़नेके सम्मुख हो उसको सातिशय अप्रमत्तविरत कहते हैं।

६२७ श्रेणी चढ़नेका पात्र कौन है?

६२७ क्षायिकसम्यग्दृष्टि और द्वितीयोपशमसम्यग्दृष्टि ही श्रेणी चढ़ते हैं। प्रथमोपशमसम्यक्त्ववाला तथा क्षायोपशमिकसम्यक्त्ववाला श्रेणी नही चढ़ सकता है।प्रथमोपशमसम्यक्त्ववाला प्रथमोपशमसम्यक्त्वको छोड़कर क्षायोपशमिकसम्यग्दृष्टि होकर प्रथम ही अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया, लोभका विसंयोजनकरके दर्शनमोहनीयकी तीन प्रकृतियोंका उपशम करके या तो द्वितीयोपशमसम्यग्दृष्टि हो जाय अथवा तीनों प्रकृतियोंका क्षय करके क्षायिक सम्यग्दृष्टि हो जाय तब श्रेणी चढ़नेका पात्र होता है।

६२८ श्रेणी किसको कहते हैं ?

६२८ जहां चारित्रमोहनीयकी शेष रहीं इक्कीस प्रकृतियोंका क्रमसे उपशम तथा क्षय किया जाय, उसको श्रेणी कहते हैं।

६२९ श्रेणीके कितने भेद हैं ?

६२९ दो–उपशमश्रेणी और क्षपकश्रेणी।

६३० उपशमश्रेणी किसे कहते हैं ?

६३० जिसमें चारित्रमोहनीयकी २१ प्रकृतियोंका उपशम किया जाय।

६३१ क्षपकश्रेणी किसको कहते हैं ?

६३१ जिसमें उक्त २१ प्रकृतियोंका क्षय किया जाय।

६३२ इन दोनों श्रेणियोंमें कौन २ से जीव चढ़ते हैं ?

६३२ क्षायिकसम्यग्दृष्टि तो दोनों ही श्रेणी चढ़ता है और द्वितीयोपशमसम्यग्दृष्टि उपशमश्रेणी ही चढ़ता है; क्षपकश्रेणी नहीं चढ़ता।

६३३ उपशमश्रेणीके कौन २ से गुणस्थान हैं?

६३३ चार हैं—आठवां, नवमां, दशवां, ग्यारहवां।

६३४ क्षपकश्रेणीके कौन २ से गुणस्थान हैं?

६३४ आठवां नववां दशमां बारहवां ये चार हैं।

६३५ चारित्रमोहनीयकी २१ प्रकृतियोंके उपशमावने तथा क्षय करनेकेलिये आत्माके कौनसे परिणाम निमित्तकारण हैं?

६३५ तीन हैं-अधःकरण, अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण।

६३६ अधःकरण किसको कहते हैं?

६३६ जिस करणमें (परिणामसमूहमें) उपरितनसमयवर्त्ती तथा अधस्तनसमयवर्त्ती जीवोंके परिणाम सदृश तथा विसदृश हों उसको अधःकरण कहते हैं। यह अधःकरण सातवें गुणस्थानमें होता है।

६३७ अपूर्वकरण किसको कहते हैं?

६३७ जिस करणमें उत्तरोत्तर अपूर्व ही अपूर्व परिणाम होते जायँ अर्थात् भिन्नसमयवर्त्ती जीवोंके परिणाम सदा विसदृश ही हों और एक समयवर्त्ती जीवोंके परिणाम सदृश भी हों और विसदृश भी हों उसको अपूर्वकरण कहते हैं। और यही आठवां गुणस्थान है।

६३८ अनिवृत्तिकरण किसको कहते हैं?

६३८ जिस करणमें भिन्नसमयवर्त्ती जीवोंके परिणाम विसदृश ही हों और एक समयवर्त्ती जीवोंके परिणाम सदृश ही हों उसको अनिवृत्तिकरण कहते हैं। यही नवमां गुणस्थान है। इन तीनों ही करणोंके परिणाम प्रतिसमय अनन्तगुणी विशुद्धता लिये होते हैं।

६३९ अधःकरणका दृष्टान्त क्या है?

६३९ देवदत्तनामक राजाके ३०७२ तीनहजार बहत्तर आदमी (जो कि १६ महकमोंमें बटे हुए हैं) सेवक हैं। महकमा नं. १ में १६२ आदमी हैं। नं. २

में १६६ । नं. ३ में १७० । नं. ४ में १७४ । नं. ५ में १७८ । नं. ६ में १८२ । नं. ७ में १८६ । नं. ८ में १९० । नं. ९ में १९४ । नं १० में १९८ । नं. ११ में २०२ । नं. १२ में २०६ । नं. १३ में २१० । नं १४ में २१४ । नं. १५ में २१८ । नं. १६ में २२२ आदमी काम करते हैं ।

पहिले महकमेके १६२ आदमियोंमेंसे पहिले आदमीका वेतन १) रुपया दूसरेका २) तीसरेका ३) रुपया इसीप्रकार एक एक बढ़ते हुए १६२ वें आदमीका वेतन १६२ रुपया है । और महकमे नं. २ में जो १६६ आदमी काम करते हैं उनमेंसे पहिले आदमीका वेतन ४० रुपया है । द्वितीयादिकका एक एक रुपया वेतन क्रमसे बढता हुआ होनेसे १६६ वें आदमीका वेतन २०५) रुपये है । और महकमे नं. ३ में १७० आदमी काम करते हैं सो इनमेंसे पहिले आदमीका वेतन ८०) रुपया है और दूसरे तीसरे आदि आदमियोंका एक एक रुपया बढ़ते बढते १७० वें आद-

मीका वेतन २४९) रुपये हैं। महकमें नं. ४ में १७४ आदमी काम करते हैं सो पहिले आदमीका वेतन १२१) रुपया है और दूसरे आदमीका एक एक रुपया बढता हुआ वेतन होनेसे १७४ वें आदमीका वेतन २९४) रुपये होते हैं। इसी क्रमसे १६ वें महकमेंमें जो २२२ आदमी नोकर हैं उनमेंसे पहिलेका वेतन ६९१) रुपये और २२२ वें आदमीका वेतन ९१२) रुपये हैं। इस दृष्टांतमें पहिले महकमेंके २९ आदमियोंका वेतन ऊपरके महकमेके किसी भी आदमीके वेतनसे नही मिलता तथा अखीरके ५७ आदमियोंका वेतन नीचेके महकमोंके किसी भी आदमीके वेतनसे नहिं मिलता है। शेष वेतन ऊपर नीचेके महकमोंके वेतनोंके साथ यथासंभव सदृश भी हैं। इसीप्रकार यथार्थमें भी उपरिके समयसंबंधी परिणामों और नीचेके समयसंबंधी परिणामोंमें सदृशता यथासंभव जाननी। इसका विशेष स्वरूप गोमट्टसारजीके गुणस्था-

नाधिकारमें तथा छपे हुए सुशीला उपन्यासके १३३ वें पृष्ठसे लगाकर १४२ वें पृष्ठतकमें देखना।

६४० सातवें गुणस्थानमें बंध कितनी प्रकृतियोंका होता है?

६४० छट्ठे गुणस्थानमें ६३ प्रकृतियोंका बंध कहा है उनमेंसे व्युच्छित्ति प्रकृति छहके (अस्थिर, अशुभ, असाता, अयशस्कीर्त्ति, अरति, शोकके) घटानेपर शेष रही ५७ में आहारकशरीर और आहारकअंगोपांग इन दो प्रकृतियोंको मिलानेसे ५९ प्रकृतियोंका बंध होता है।

६४१ सातवें गुणस्थानमें उदय कितनी प्रकृतियोंका होता है?

६४१ छट्ठे गुणस्थानमें जो ८१ प्रकृतियोंका उदय कहा है उनमेंसे व्युच्छित्ति प्रकृति पांचके (आहारक शरीर, आहारक अंगोपांग, निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, और स्त्यानगृद्धिके) घटानेपर शेष रही ७६ प्रकृतियोंका उदय होता है।

६४२ सातवें गुणस्थानमें सत्त्व कितनी प्रकृतियोंका रहता है ?

६४२ छट्ठे गुणस्थानकी तरह इस गुणस्थानमें भी १४६ की सत्ता रहती है किंतु क्षायिकसम्यग्दृष्टिके १३९ का ही सत्त्व रहता है ।

६४३ आठवें गुणस्थानमें बंध कितनी प्रकृतियोंका होता है?

६४३ सातवें गुणस्थानमें जो ५९ प्रकृतियोंका बंध कहा है उनमेंसे व्युच्छित्ति प्रकृति एक देवायुको घटानेपर ५८ का बंध होता है ।

६४४ आठवें गुणस्थानमें उदय कितनी प्रकृतियोंका होता है?

६४४ सातवें गुणस्थानमें जो ७६ प्रकृतियोंका उदय कहा है उनमेंसे व्युच्छित्ति प्रकृति चारके (सम्यक्प्रकृति, अर्द्धनाराच, कीलक, असंप्राप्तासृपाटिका संहननके) घटानेपर शेष ७२ प्रकृतियोंका उदय होता है ।

६४५ आठवें गुणस्थानमें सत्त्व कितनी प्रकृतियोंका है?

६४५ सातवें गुणस्थानमें जो १४६ का सत्त्व कहा है उनमेंसे व्युच्छित्ति प्रकृति अनंतानुबंधी क्रोध मान माया लोभ इन चारको घटाकर द्वितीयोपशम सम्यग्दृष्टी उपशमश्रेणीवालेके तो १४२ का सत्त्व है किंतु क्षायिक सम्यग्दृष्टि उपशमश्रेणीवालेके दर्शनमोहनीयकी तीन प्रकृतिरहित १३९ का सत्त्व रहता है। और क्षपकश्रेणीवालेके सातवें गुणस्थानकी व्युच्छित्ति प्रकृति आठको (अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया, लोभ, तथा दर्शनमोहनीयकी ३ और एक देवायुको) घटाकर शेष १३८ प्रकृतिका सत्त्व रहता है।

६४६ नवमे अर्थात् अनिवृत्तिकरण गुणस्थानमें बंध कितनी प्रकृतियोंका होता है?

६४६ आठवें गुणस्थानमें जो ५८ प्रकृतियोंका बंध कहा है उनमेंसे व्युच्छित्ति प्रकृति छत्तीसको

(निद्रा, प्रचला, तीर्थंकर, निर्माण, प्रशस्तविहायोगति, पंचेन्द्रियजाति, तैजसशरीर, कार्मणशरीर, आहारकशरीर, आहारकअंगोपांग, समचतुरस्रसंस्थान, वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिकअंगोपांग, देवगति, देवगत्यानुपूर्वी, रूप, रस, गंध, स्पर्श, अगुरुलघुत्व, उपघात, परघात, उच्छ्वास, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, हास्य, रति, जुगुप्सा, भय को) घटानेपर शेष रही २२ प्रकृतियोंका बंध होता है ।

६४७ नवमे गुणस्थानमें उदय कितनी प्रकृतियोंका होता है ?

६४७ आठवें गुणस्थानमें जो ७२ प्रकृतियोंका उदय होता है उनमेंसे व्युच्छित्ति प्रकृति छहको(हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्साको) घटादेनेपर शेष रही ६६ प्रकृतियोंका उदय होता है ।

६४८ नवमें गुणस्थानमें सत्व कितनी प्रकृतियोंका होता है ?

६४८ आठवें गुणस्थानकी तरह इस गुणस्थानमें भी उपशमश्रेणीवाले द्वितीयोपशमसम्यग्दृष्टिके १४२ क्षायिक सम्यग्दृष्टिके १३९ और क्षपक श्रेणीवालेके १३८ प्रकृतिका ही सत्त्व रहता है।

६४९ दशवें सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थानका स्वरूप क्या है?

६४९ अत्यन्तसूक्ष्म अवस्थाको प्राप्त लोभ कषायके उदयको अनुभवन करते हुये जीवके सूक्ष्मसाम्पराय नामका दशवां गुणस्थान होता है।

६५० दशवें गुणस्थानमें बंध कितनी प्रकृतियोंका होता है?

६५० नवमे गुणस्थानमें जो २२ प्रकृतियोंका बंध होता है उनमेंसे व्युच्छित्तिप्रकृति पांचको (पुरुषवेद, संज्वलनक्रोध, मान, माया लोभको) घटाकर शेष रही १७ प्रकृतियोंका बंध होता है।

६५१ दशवें गुणस्थानमें उदय कितनी प्रकृतियोंका होता है?

६५१ नवमे गुणस्थानमें जो ६६ प्रकृतियोंका उदय होता है उनमेंसे व्युच्छित्तिप्रकृति छहको(स्त्रीवेद, पुरुषवेद, नपुंसकवेद, संज्वलनक्रोध, मान, मायाको) घटादेनेपर शेष रही ६० प्रकृतियोंका उदय होता है।

६५२ दशवें गुणस्थानमें सत्त्व कितनी प्रकृतियोंका रहता है?

६५२ उपशमश्रेणीमें तो नवमेकी तरह द्वितीयोपशमसम्यग्दृष्टिके १४२ और क्षायिक सम्यग्दृष्टिके १३८ और क्षपक श्रेणीवालेके नवमे गुणस्थानमें जो १३८ प्रकृतियोंका सत्त्व है उनमेंसे व्युच्छित्तिप्रकृति छत्तीसको (तिर्यग्गति १ तिर्यग्गत्यानुपूर्वी १ विकलत्रयकी ३ निद्रानिद्रा १ प्रचलाप्रचला १ स्त्यानगृद्धि १ उद्योत १ आतप १ एकेन्द्रिय १ साधारण १ सूक्ष्म १ स्थावर १ अप्रत्याख्यानावरणकी ४ प्रत्याख्यानावरणकी ४ नोकषायकी ९ संज्वलनक्रोध १ मान १ माया १ नरकगति १ नरकगत्यानुपूर्वी १ को) घटादेनेपर शेष रही १०२ प्रकृतियोंका सत्त्व है।

६५३ ग्यारहवें उपशान्तमोह नामक गुण-स्थानका स्वरूप क्या है?

६५३ चारित्रमोहनीयकी २१ प्रकृतियोंके उपशम होनेसे यथाख्यात चारित्रको धारण करनेवाले मुनिके ग्यारहवां उपशान्त मोह नामका गुणस्थान होता है। इस गुणस्थानका काल समाप्त होनेपर मोहनीयके उदयसे जीव नीचले गुणस्थानोंमें आजाता है।

६५४ ग्यारहवें गुणस्थानमें बंध कितनी प्रकृतियोंका होता है?

६५४ दशवें गुणस्थानमें जो १७ प्रकृतियोंका बंध होता था उनमेंसे व्युच्छित्तिप्रकृति १६ अर्थात् ज्ञानावरणकी ५ दर्शनावरणकी ४ अंतरायकी ५ यशःकीर्त्ति १ उच्चगोत्र १ इन सबको घटादेनेपर शेष रही एक मात्र सातावेदनीयका बंध होता है।

६५५ ग्यारहवें गुणस्थानमें उदय कितनी प्रकृतियोंका होता है?

६५५ दशवें गुणस्थानमें जो ६० प्रकृतियोंका उदय होता है उनमेंसे व्युच्छित्तिप्रकृति एक संज्वलन लोभको घटादेनेपर शेष रही ५९ प्रकृतियोंका उदय होता है।

६५६ ग्यारहवें गुणस्थानमें सत्त्व कितनी प्रकृतियोंका होता है?

६५६ नवमे और दशवें गुणस्थानकी तरह द्वितीयोपशमसम्यग्दृष्टिके १४२ और क्षायिकसम्यग्दृष्टिके १३९ का सत्त्व रहता है।

६५७ क्षीणमोह नामक बारहवें गुणस्थानका स्वरूप क्या है और किसके होता है?

६५७ मोहनीय कर्मके अत्यन्त क्षय होनेसे स्फटिक भाजनगत जलकी तरह अत्यंत निर्मल अविनाशी यथारूयात चारित्रके धारक मुनिके क्षीणमोह गुणस्थान होता है।

६५८ बारहवें गुणास्थानमें कितनी प्रकृतियोंका बन्ध होता है?

६५८ एक सातावेदनीमात्रका बंध होता है।

६५९ वारहवें गुणस्थानमें उदय कितनी प्रकृतियोंका होता है?

६५९ ग्यारहवें गुणस्थानमें जो ५९ प्रकृतियोंका उदय होता है उनमेंसे वज्रनाराच और नाराच इन दो व्युच्छित्ति प्रकृतियोंको घटादेनेपर ५७ प्रकृतियोंका उदय होता है।

६६० वारहवें गुणस्थानमें सत्त्व कितनी प्रकृतियोंका रहता है?

६६० दशवें गुणस्थानमें क्षपकश्रेणीवालेकी अपेक्षा १०२ प्रकृतियोंका सत्त्व है उनमेंसे व्युच्छित्तिप्रकृति संज्वलन लोभको घटादेनेपर शेष रही १०१ प्रकृतियोंका सत्त्व रहता है।

६६१ सयोगकेवलीनामक तेरहवें गुणस्थानका स्वरूप क्या है और किसके होता है?

६६१ घातिया कर्मोंकी ४७ (देखो प्रश्न नं—में)

और अघातिया कर्मोंकी १६ (नरक तिर्यग्गति २, तदानुपूर्वी २, विकलत्रय ३, आयुस्त्रिक ३, उद्योत १, आतप १, एकेन्द्रिय १, साधारण १, सूक्ष्म १, और स्थावर १) मिलाकर ६३ प्रकृतियोंका क्षय होनेसे लोकालोकप्रकाशक केवलज्ञान तथा मनोयोग वचनयोग और काय योगके धारक अरहंत भट्टारकके सयोगकेवली नामा तेरहवां गुणस्थान होता है। यही केवली भगवान् अपनी दिव्य ध्वनिसे भव्य जीवोंको मोक्षमार्गका उपदेश देकर संसारमें मोक्षमार्गका प्रकाश करते हैं।

६६२ तेरहवें गुणस्थानमें बंध कितनी प्रकृतियोंका होता है?

६६२ एकमात्र सातावेदनीका बंध होता है।

६६३ तेरहवें गुणस्थानमें उदय कितनी प्रकृतियोंका होता है?

६६३ बारहवें गुणस्थानमें जो सत्तावन प्रकृतियोंका उदय होता है उनमेंसे व्युच्छित्ति प्रकृति सोल-

हको (ज्ञानावरणकी ५ अंतराय ५ दर्शनावरणकी ४ निद्रा और प्रचलाको) घटादेनेपर शेष रहीं ४१ प्रकृतियोंमें तीर्थंकरकी अपेक्षासे एक तीर्थंकरप्रकृतिको मिलाकर ४२ प्रकृतियोंका उदय होता है।

६६४ तेरहवें गुणस्थानमें सत्त्व कितनी प्रकृतियोंका होता है ?

६६४ बारहवें गुणस्थानमें जो १०१ प्रकृतियोंका सत्त्व है उनमेंसें व्युच्छित्तिप्रकृति सोलहको (ज्ञानावरणकी ५ अंतरायकी ५ दर्शनावरणकी ४ निद्रा १ और प्रचला १ को) घटादेनेपर शेष ८५ प्रकृतियोंका सत्त्व रहता है।

६६५ अयोगकेवलीनामक चौदहवें गुणस्थानका स्वरूप क्या है और किसके होता है ?

६६५ मनवचनकायके योगकर रहित केवलज्ञानसहित अरहंत भट्टारकके चौदहवां गुणस्थान होता है। इस गुणस्थानका काल अ इ उ ऋ

ऌ इन पांच ह्रस्व स्वरोंके उच्चारण करनेके बराबर है। अपने गुणस्थानके कालके द्विचरम समयमें सत्ताकी ८५ प्रकृतियोंमेंसे ७२ प्रकृतियोंका और चरम समयमें १३ प्रकृतियोंका नाश करके अरहंत भगवान् मोक्षधामको (सिद्धशिलाको) पधारते हैं।

६६६ चौदहवें गुणस्थानमें बंध कितनी प्रकृतियोंका होता है ?

६६६ तेरहवें गुणस्थानमें जो एक सातावेदनीका बंध होता था उसकी उसी गुणस्थानमें व्युच्छित्ति होनेसे यहां किसीका भी बंध नहिं होता।

६६७ चौदहवें गुणस्थानमें उदय कितनी प्रकृतियोंका होता है ?

६६७ तेरहवें गुणस्थानमें जो ४२ का उदय होता है उनमेंसे व्युच्छित्ति प्रकृति तीसको (वेदनीय १ वज्र-ऋषभनाराचसंहनन १ निर्माण १ स्थिर १ अस्थिर १ शुभ १ अशुभ १ सुस्वर १ दुःस्वर १ प्रशस्तविहायोगति १ अप्रशस्त

विहायोगति १ औदारिकशरीर १ औदारिकअंगोपांग १ तैजसशरीर १ कार्मणशरीर १ समचतुरस्रसंस्थान १ न्यग्रोध १ स्वाति १ कुब्जक १ वामन १ हुडंक १ स्पर्श १ रस १ गंध १ वर्ण १ अगुरुलघुत्व १ उपघात १ परघात १ उच्छ्वास १ और प्रत्येक को) घटानेपर शेष रहीं बारह प्रकृतियोंका (वेदनीय १ मनुष्यगति १ मनुष्यायु १ पंचेंद्रियजाति १ सुभग १ त्रस १ बादर १ पर्याप्त १ आदेय १ यशःकीर्त्ति १ तीर्थंकरप्रकृति १ और उच्च गोत्र १ का) उदय होता है ।

६६८ चौदहवें गुणस्थानमें सत्त्व कितनी प्रकृतियोंका रहता है ?

६६८ तेरहवें गुणस्थानकी तरह इस गुणस्थानमें भी ८५ प्रकृतियोंका सत्त्व है परंतु द्विचरम समयमें ७२ और अन्तिम समयमें १३ प्रकृतियोंका सत्त्व नष्ट करके अरहंत भगवान् मोक्षको पधारते हैं ।

इति पंचमोऽध्यायः समाप्तः ।

(ग्रंथकर्त्ताका अन्तिम वक्तव्य ।)

दोहा

वंदौं श्रीमहावीरजिन, वर्द्धमान गुणखान ।
भव्यसरोजसमूहरवि, करन सकल कल्यान ॥ १ ॥
प्रांत ग्वालियरमें वसै, भिंड नगर शुभथान ।
श्रीयुत माधवसिंह नृप, न्याय नीति गुणखान ॥ २ ॥
अर्गलपुरवासी वणिक, जाति वरैया जान ।
लछमन सुत गोपाल तहँ, कीनी आय दुकान ॥ ३ ॥
इन्द्रप्रस्थवासी सुजन, मोतीलाल सुजान ।
उदासीन संसारसों, खोजत निज कल्यान ॥ ४ ॥
आये या पुर भिंडमें, ढूंढ़त तत्त्वज्ञान ।
तिन निमित्त लघुग्रंथ यह, रच्यौ सपरहित जान ॥ ५ ॥
श्रीयुत पन्नालालजी, अतिसज्जन गुणवान ।
तिंन निज काज विहाय सब, करी सहाय सुजान ॥ ६ ॥
अल्पबुद्धि मम विषय यह, जिनसिद्धांत महान ।
भूल देखिके शोधियो, करियो क्षमा सुजान ॥ ७ ॥

जो सज्जन इस ग्रंथको, पढैं नित्य धरि ध्यान ।
ते श्रीजिनसिद्धान्तमें, करैं प्रवेश सुजान ॥ ८ ॥
विक्रम संवत सहस इक, नौसै छचासठि जान ।
कृष्णपक्ष श्रावण प्रथम, तिथि नवमी दिन भान ॥ ९ ॥
जिनसिद्धान्तप्रवेशिका, या दिन पूरन जान ।
पढहु पढावहु चिर जियहु, यावच्चन्द्र सुभान ॥ १० ॥

इति श्रीजैनसिद्धान्तप्रवेशिका समाप्ता ।

विपयानुक्रमणिका.